।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का प्रबल उद्घोषक पाक्षिक

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2013-16
दयानन्दाब्द १९१
सृष्टि सं.- १९६०८५३११५

वर्ष–13 अंक–20 माघ शु. १३ से फाल्गुन कृ. ११ सं. २०७१ वि. 1 से 15 फरवरी 2015 अमरोहा, उ.प्र. पृ. 12 प्रति–5/–

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित प्रधान धर्मपाल आर्य का प्रथम बार सभा कार्यालय में पधारने पर स्वागत करते सभा के कर्मचारीगण- केसरी।

बेटी बचाओ एवं महिला सशक्तिकरण सम्मेलन का हुआ आयोजन

लड़कों से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं लड़कियाँ : पद्मश्री संतोष यादव

प्रतिनिधि
हरियाणा।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं बेटी बचाओ अभियान के संयुक्त तत्वावधान में ११ जनवरी को इन्विटेशन गार्डन, रोहतक में बेटी बचाओ एवं महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश ने कहा कि बेटियों को बचाने की मुहिम सर्वप्रथम आर्यसमाज ने प्रारम्भ की थी। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रारम्भ किया जाने वाला 'बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ' अभियान आर्यसमाज की बहुत बड़ी उपलब्धि है।

चार बार हिमालय को फतह करने वाली व पदमश्री सम्मान से सम्मानित संतोष यादव ने कहा कि आज लड़कियां किसी भी क्षेत्र में लड़कों से कम नहीं हैं। उन्होंने कहा कि लड़कियां भी अपने अन्दर छिपी ताकत को पहचान कर उसका सदुपयोग करें तथा देश का नाम रोशन करें। बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा पूनम आर्या (से०नि० आईएएस), ने कहा कि बेटी बचाओ अभियान का मुख्य उद्देश्य नारी के

अस्तित्व को बचाने का है। यदि कन्याओं को यूं ही मां के पेट में मारा जाता रहा, तो एक दिन न सिर्फ नारी, बल्कि व्यक्ति का अस्तित्व मिटने की नौबत भी आ जाएगी।

रोहतक के विधायक मनीष ग्रोवर ने कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा 'बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ' का जो कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है, वह सबके लिए अनुकरणीय है। उन्होंने आर्यसमाज द्वारा चलाए जा रहे 'बेटी बचाओ' अभियान की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेशाध्यक्ष प्रतिभा सुमन ने कहा कि नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रारम्भ किया गया यह अभियान समाज के नवनिर्माण में एक जोरदार पहल है, जिसका सभी धार्मिक, राजनीतिक तथा सामाजिक संगठनों द्वारा स्वागत किया जाना चाहिए, क्योंकि बेटी बचेगी, तभी देश बचेगा।

इसी क्रम में बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक प्रवेश आर्या ने कहा कि हम सन् २००५ से इस अभियान को लेकर चल रहे हैं। यह मनोवृत्तियों को बदलने का आन्दोलन है। मानसिकता एक मिनट में नहीं बदलती। यह वर्षों पुरानी जड़ता है, जिसे तोड़ने में समय लगेगा। लेकिन अन्त में जीत हमारी ही होगी।

१ मार्च को होगा गुरुकुलम का दशाब्दी समारोह

उदयनाचार्य
पिड़ीचेड, मेदक (तेलंगाना)।

निगम नीडम्- वेद गुरुकुलम् का प्रथम दशाब्दी वार्षिकोत्सव एवं महर्षि दयानन्द प्रवेश द्वार का भव्य उद्घाटन समारोह आगामी १ मार्च को प्रात: 8 से सायं 5 बजे तक हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा।

ज्ञातव्य है कि उक्त गुरुकुल की स्थापना ३ अप्रैल २००४ में की गयी थी। इस अवसर पर स्मारिका का विमोचन व प्रवेश द्वार का उद्घाटन स्वामी आर्यवेश जी (प्रधान- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली) द्वारा किया जाएगा।

समारोह में यज्ञ-ब्रह्मा डॉ० वसुधा शास्त्री व अरविन्द शास्त्री, मुख्यातिथि निम्मंग प्रसाद, विशिष्ट अतिथि विट्ठलराव के साथ ही श्रीचिलमुला सत्यारेड्डी, श्रीधर राव, आकुल विश्वेन्द्र, डॉ० विजयवीर विद्यालंकार, डॉ० मसनचिलप्पा, आचार्य सत्यवीर साहित अनेक विद्वज्जन पधार रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला १४ से

एस०पी० सिंह
नई दिल्ली।

प्रगति मैदान में अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला १४ से २२ फरवरी तक लगने जा रहा है, जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५- हनुमान रोड, नई दिल्ली द्वारा भी वैदिक साहित्य के विक्रय एवं प्रचार हेतु दुकानें लगायी जाएंगी।

महर्षि दयानन्द सरस्वमी प्रणीत कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को प्रचारार्थ मात्र रु० १०/- में उपलब्ध कराया जाएगा। इसके साथ ही अन्य साहित्य पर भी विशेष छूट दी जाएगी।

धूमधाम से मनाया वार्षिकोत्सव

आचार्य वाचस्पति
टीकरी भोलाझाल, मेरठ।

मकर सौर सक्रान्ति के पावन पर्व पर गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव १४ जनवरी को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर ऋग्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति एवं नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन व वेदारम्भ संस्कार तथा भजन-प्रवचन एवं ब्रह्मचारियों के रोचक बौद्धिक कार्यक्रम हुए। १३ जनवरी को 'वैदिक वांग्मय में देवताओं का स्वरूप' विषय पर वेद संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया।

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा–2015

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा- १२ फरवरी से १८ फरवरी २०१५

प्रस्थान : १२ फरवरी २०१५ को प्रात: ७ बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4३११ अप। ११ फरवरी २०१५ विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्य समाज मंदिर, गंज स्टेशन मार्ग, मुरादाबाद, दूरभाष-०९4१००६58३२ वापसी : १७ फरवरी २०१५ आला हज़रत से, आगमन : मुरादाबाद सायं 6 बजे, १८ फरवरी २०१५

: परिभ्रमण कार्यक्रम :

अहमदाबाद-सावरमती आश्रम, अक्षरधाम मन्दिर-पोरबन्दर, द्वारिका, भेंट द्वारिका व सोमनाथ मंदिर आदि दर्शनीय स्थल

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास, परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था उप सभा द्वारा होगी। आप **3000**/- रूपये का ड्राफ्ट अथवा चैक आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से खाते में भिजवा दें या कार्यालय अमरोहा को नकद हस्तगत कराकर रसीद प्राप्त कर लें। आप अपनी सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता संख्या- **30404724002** अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता संख्या- **88222200014649** में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अवश्य दें ताकि आपको रसीद भेजी जा सके। आपकी धनराशि **3000**/- **05** जनवरी **2015** तक प्राप्त हो जानी चाहिए। समुचित व्यवस्था में आपका सहयोग प्रार्थनीय। आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का कार्यक्रम बनाएं...

श्रीराम गुप्ता- संरक्षक, हरिश्चन्द्र आर्य- अधिष्ठाता (05922-263412), डॉ. अशोक कुमार आर्य- प्रधान सम्पादक (09412139333), डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार- समाचार सम्पादक (09412634672), ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य- कोष प्रमुख (09412493724), नरेन्द्र कांत गर्ग- संयोजक (09837809405)।

दुबई में होगा ३०वां हिन्दी साहित्य समारोह

डॉ.महेश दिवाकर
मुरादाबाद।

अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य कलामंच के तत्वावधान में नार्वे- स्वीडन, वैस्ट इण्डीज, उज्बेकिस्तान, मॉरिशस, श्रीलंका, नेपाल, सिंगापुर आदि सुदूर देशों सहित देश-विदेश में अनेकानेक सफल साहित्यिक कार्यक्रमों के पश्चात् ३०वां वार्षिक साहित्य सम्मेलन दुबई में होगा।

सूच्य है कि अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य कला मंच, भारतवर्ष का ३०वां वार्षिक साहित्य समारोह आगामी 4 से १२ जून के बीच दुबई में होना प्रस्तावित है, जिसमें 'विश्वपटल पर हिन्दी' शीर्षक पर दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी होगी। साथ ही पुस्तकों का लोकार्पण, अन्तर्राष्ट्रीय काव्य-गोष्ठी और साहित्यकार-सम्मान समारोह होगा, जिसमें भाग लेने वाले साहित्यकारों को ही विविध पुरस्कार/ सम्मान उनकी साहित्यिक उपलब्धियों के निमित्त पूर्ववत् प्रदान किये जाएंगे।

'विश्वपटल पर हिन्दी' शीर्षक के अन्तर्गत विविध आलेखों पर स्वतंत्र रूप में ग्रन्थ प्रकाशित होगा, जिसका लोकार्पण, अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार के आरम्भ में ही किया जाएगा। साहित्य समारोह में सहभागिता करने वाले प्राध्यापकों, आचार्यों और साहित्यकारों के लेख इस ग्रन्थ में समाहित रहेंगे। लोकार्पण के बाद यह ग्रन्थ सबको निशुल्क प्रदान किया जाएगा। संगोष्ठी के कुछ अन्य उपशीर्षक हैं- ♦राष्ट्रीय स्वाभिमान से जुड़ा राष्ट्रभाषा का प्रश्न, ♦ हिन्दी का उत्थान कैसे हो, ♦ हिन्दी के विकास में विज्ञान की भूमिका, ♦ विश्व के विविध देशों में हिन्दी का स्वरूप-विकास, ♦ विश्व बाजार में हिन्दी का महत्व, यूएनओ की भाषा बने हिन्दी, ♦ विश्व हिन्दी सम्मेलनों की उपादेयता और भारतीय राजनीति।

कृपया अपना आलेख ई-मेल : sahityakalamanchmbd @gmail.com पर अथवा सुन्दर हस्तलिखित अथवा कम्प्यूटरीकृत 'वॉकमैन चाणक्य फॉन्ट' में अधिकतम पांच पृष्ठों में पंजीकृत डाक से भी भेज सकते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी के उन्नयन एवं संवर्द्धन हेतु किया जाने वाला यह हिन्दी सम्मेलन नितांत अराजनीतिक एवं अव्यावसायिक है, और पूर्णतया स्वयंसेवी आधार पर है। इन्दिरा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय एअरपोर्ट, नई दिल्ली से दुबई जाने और यात्रा के उपरांत वापस भारत आने का एयर टिकट तथा वीजा-शुल्क, दुबई के अन्तर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट से होटल तक जाने और आने तथा निर्धारित कार्यक्रमानुसार वातानुकूलित बसों से दुबई के विभिन्न स्थलों का भ्रमण, चारसितारा होटल में लगभग एक सप्ताह तक रहने, प्रतिदिन जलपान और भोजन- दोपहर व रात्रि तथा अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार सभागार आदि का सम्पूर्ण व्यय रु० ५००००/- निर्धारित है, जो कि एक व्यक्ति का कुल व्यय है, तथा नॉन रिफन्डेबल है।

यदि आप हिन्दी के उन्नयन के लिए उक्त समारोह में शामिल होने के इच्छुक हैं, तो कृपया रु० ५००००/- का चैक किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक की सी०बी०एस० ब्रांच का 'डॉ० महेश चन्द्र दिवाकर' के नाम भेजें; अथवा डॉ० महेश चन्द्र दिवाकर, ICICI Bank. देहली रोड, मुरादाबाद (उ०प्र०) A/C N0. : 051401000598, IFSC Code: ICIC0000514 में सीधे जमा कर, जामपर्ची की छायाप्रति अवश्य भेजें। साथ ही वीजा हेतु अपने पासपोर्ट की दो कलर्ड छायाप्रतियां 80% फ्रन्ट फेस वाले चार डिजिटल कलर्ड पासपोर्ट छायाचित्र (वीजा बनवाने हेतु), प्रस्थान की तिथि से पूर्व पासपोर्ट की कम से कम 9 माह की वैधता, 6 माह के बैंक बैलेंस की प्रमाणित प्रति, सरकारी संस्थानों में कार्यरत बन्धु/ बहिनें अनापत्ति प्रमाण (एन०ओ०सी०) सहित अपना शैक्षिक-साहित्यिक बायोडाटा भी पंजीकृत डाक से भिजवायें। पता है-

डॉ० महेश 'दिवाकर', डी०लिट्०
संयोजक- दुबई अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समारोह- २०१५
'सरस्वती भवन', १२- मिलन विहार, देहली मार्ग
मुरादाबाद- २४४२२१ (उ०प्र०)

यूजीसी द्वारा दोआबा कालेज में स्वामी दयानन्द स्टडीज सैन्टर की स्थापना

डॉ. नरेश कुमार धीमान
जालंधर (पंजाब)

यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन, भारत सरकार की ओर से प्रदत्त आर्थिक सहयोग से दोआबा कालेज, जालन्धर में 'स्वामी दयानन्द स्टडीज सैन्टर' सत्र २०१४-२०१५ से स्थापित किया गया है। इस सैन्टर के माध्यम से स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं को विद्यार्थियों तथा आम जनता तक पहुंचाने के साथ-साथ शोधकार्य, संगोष्ठी, कार्यशाला आदि भी आयोजित किये जाएंगे। स्वामी दयानन्द के समस्त साहित्य को डिजिटल रूप में इंटरनेट (www.doabacollege.net) पर उपलब्ध कराने की योजना भी तैयार की गयी है।

महाविद्यालय द्वारा जारी विज्ञप्ति में प्राचार्य डॉ. नरेश कुमार धीमान ने सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों, आर्य समाजिक संस्थाओं तथा आर्यजनों से निवेदन किया है कि यदि उनके पास स्वामी दयानन्द का कोई भी ग्रन्थ किसी भी भाषा के किसी भी फॉन्ट (चाणक्य, कृतिदेव, शुषा आदि) में कम्पोज किया हुआ है, तो वे email: dayanandstudy @ doabacollege.net पर सामग्री भेजने की कृपा करें।

महाविद्यालय द्वारा उस सामग्री को इन्टरनेट के लिए यूनिकोड फॉन्ट में परिवर्तित कर, कालेज की उपरोक्त वैबसाइट पर अपलोड कर दिया जाएगा। स्टडी सेंटर द्वारा आशा व्यक्त की गई है कि ऋषिवर दयानन्द के इस पुनीत कार्य में सभी का सहयोग अवश्य प्राप्त होगा।

सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

कोटा। मकर संक्रान्ति पर्व के अवसर पर नदीपार क्षेत्र में सामवेद पारायण यज्ञ १० से १४ जनवरी रामकृष्ण मन्दिर, कुन्हाडी नाका चुंगी चौराहे के पास सम्पन्न हुआ।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य शिवदत्त पाण्डेय (वेद वेदांग विद्यापीठ गुरुकुल आश्रम, यज्ञपति गंज, सुल्तानपुर) ने ईश्वर का सच्चा स्वरूप एवं अवतारवाद, धर्म का सच्चा स्वरूप, मुहुर्तवाद, हस्तरेखा, राशिफल, वास्तुदोष, कर्मफल सिद्धांत, पितर श्राद्ध तर्पण आदि पाखण्ड, अन्धविश्वास पर अपने विचार के साथ सुखी गृहस्थ और परिवार व्यवस्था का स्वरूप प्रस्तुत किया।

आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० दिनेश चन्द्र आर्य (दिल्ली) ने सुमधुर भजनों की प्रस्तुति की। आर्यसमाज के प्रधान पी०सी० मित्तल एवं मंत्री डी०एल० आर्य ने सभी का धन्यवाद दिया।

आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन एवं वैदिक पुस्तक दीर्घा का लोकार्पण

ईश्वरदयाल माथुर
जयपुर।

विगत चार जनवरी को वैशाली नगर आर्यसमाज भवन में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन अनेक संकल्प लेकर सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर वैदिक ग्रन्थ एवं पुस्तक दीर्घा का भी लोकार्पण हुआ।

शुभारम्भ अग्निहोत्र के साथ हुआ। संस्कारित पीढ़ी निर्माण की दिशा में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राज०) के अध्यक्ष यशपाल यश ने पौत्री प्रणवी का मुण्डन संस्कार संपन्न किया।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्ययुवक परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल यश ने उल्लेख किया कि वैदिक संस्कार एवं आत्मगौरव जगाने के लिए परिषद् अनेक कार्यक्रम व शिविर आयोजित करता है। इनमें युवक प्रशिक्षण शिविर, वीरांगना सम्मान एवं अन्तर्जातीय विवाहित युगल सम्मान प्रमुख हैं।

परिषद् के अध्यक्ष डॉ० अनिल आर्य ने अपने संबोधन में गर्व के साथ उल्लेख किया कि स्वाधीनता आन्दोलन में सर्वाधिक बलिदानियों में आर्य समाजी ही रहे हैं। डॉ० रामपाल विद्या भास्कर से प्रेरणा प्राप्त गोपाल शर्मा ने अपने दादा, वेदों के विद्वान स्मृति शेष हरिदत्त षोडश तीर्थ की स्मृति में उनके संग्रहीत ग्रन्थों एवं पुस्तकों को वैशाली नगर आर्यसमाज को समर्पित किया। आर्यसमाज ने दानियों के सहयोग से प्राप्त बुक शेल्फों में पुस्तक दीर्घा का रूप देकर इनका लोकार्पण षोडश तीर्थ की पुत्रवधू से कराया। सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करने वालों में डॉ० रामपाल विद्याभास्कर, रामकुमार सिंह, पुलिस अधीक्षक महावीर सिंह, सुमित्रा आर्या, उषा भुसावरी, हरिचरण सिंहल भी थे। सुधा मित्तल ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किये। अन्त में समाज के प्रधान डॉ० मोतीलाल शर्मा एवं ईश्वरदयाल माथुर स्वागत मंत्री ने आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया। ऋषिलंगर के साथ समारोह का समापन हुआ।

प्रवेश सूचना-सत्र: २०१५-२०१६

आर्यकन्या गुरुकुल

शास्त्री नगर, लुधियाना- १४१००२

छठी कक्षा (आयु +9 से -११) वर्ष कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल १००/-) भरकर ३१.०३. २०१५ तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किये जा सकते हैं।) कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा ०५ अप्रैल २०१५ दिन रविवार को प्रात: ८:०० बजे होगी। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

-सत्यानन्द जी मुंजाल
(कुलपति)

बिहार में ब्र० राजसिंह आर्य को दी श्रद्धांजलि

पटना, (रमेश कुमार गुप्ता)। बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा पटना में ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य के निधन की सूचना मिलते ही सभा प्रधान गंगाप्रसाद की अध्यक्षता में शोकसभा आयोजित की गयी। किसी की भी आंखों के आंसू रोकते नहीं रुक रहे थे। फिर भी धैर्यपूर्वक इस विषम परिस्थिति में उनकी कृतियों को आर्यो ने याद किया।

जिस उर्जा और उत्साह के साथ वे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों का आयोजन और संयोजन करते थे, उसे भुलाया नहीं जा सकता। वे आर्य समाज के सफल योद्धा थे, जिन्होंने विपरीत परिस्थिति में भी चुनौतियों को स्वीकार कर, आर्य समाज का कार्य किया।

उनके निधन से आर्यसमाज ने एक कर्मठ, निष्ठावान और सच्चा सपूत खोया है। इस अवसर पर मंत्री रमेन्द्र कुमार गुप्ता, कोषाध्यक्ष सत्यदेव प्रसाद गुप्ता सहित भारी संख्या में उपस्थिति थी।

आर्य महानुभावों के लिए
छ: प्रकार के कलैण्डर

१. ईश्वर के १०० नाम
२. वैदिक संध्या विज्ञान
३. तैंतीस कोटि के देवता
4. त्रैतवाद
5. यज्ञ विज्ञान
6. ब्रह्मचक्र

इन्हें आप निम्न वेबसाइट पर देख सकते हैं-
www.aryasamajrawatbhata.in
इनके फ्लैक्स निकलवा सकते हैं। शिक्षण-समग्री के रूप में दूसरों को समझाने के लिए प्रयोग कर सकते हैं। यह नई चीज है। अपने घर में, आर्य समाज में टांग सकते हैं।

ओमप्रकाश आर्य, मंत्री
आर्यसमाज रावतभाटा, वाया कोटा, जि०- चित्तौड़गढ़ (राज०)

संक्षिप्त समाचार

विश्वशान्ति यज्ञ संपन्न

जयपुर, (ईश्वरदयाल माथुर)। श्रीकृष्ण चेतना समिति मानवसरोवर द्वारा १० जनवरी को जनकल्याणार्थ विश्व शांति यज्ञ का आयोजन वैदिक पद्धति से हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष यशपाल यश ने अपने संबोधन में कहा कि आतंक से भरे विश्व में हाहाकार को बहुत कुछ यज्ञों के माध्यम से शांत किया जा सकता है। समिति के मंत्री नन्दकिशोर काम्बोज के अनुसार नगर पार्षदों सहित नेत्र एवं देहदान समिति के अध्यक्ष हरिचरण सिंहल के आह्वान पर तत्स्थल पर ही पांच देहदान तथा दस नेत्रदान संकल्प-पत्र प्राप्त हुए। एक पौराणिक संस्था को आर्य समाज के कार्यक्रमों से जोड़ने व प्रेरित करने की दिशा में वैदिक प्रवक्ता ईश्वर दयाल माथुर की सफल भूमिका रही और जनता में अनुकूल संदेश गया।

साहित्यकार सम्मानित

रिहावली फतेहाबाद (मुकेश कुमार)। १४ जनवरी मकर संक्रान्ति के पर्व के अवसर पर प्रगतिशील संस्था 'ब्रजलोक सा०-कला-सं अकादमी' द्वारा देश भर के प्रतिष्ठित साहित्यकारों को सम्मानित किय गया। अध्यक्ष मुकेश कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि आगामी कार्यक्रम होली मिलन समारोह के रूप में होगा और इस कार्यक्रम की सफलता के लिए यज्ञ-भजन संध्या आदि की व्यवस्था एक दिन पहले की जाएगी। इस कार्यक्रम की सफलता के लिए ऋषि वैदिक साहित्य पुस्तकालय ब्रजलोक अकादमी संयुक्त रूप से कार्य करेंगे

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर सम्पन्न

इन्दौर। गायत्री महायज्ञ, योग साधना एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर २१ से २८ दिसम्बर तक ओमानन्द आश्रम देवधर में सम्पन्न हुआ, जिसमें ध्यान, प्राणायाम, योगासान- ब्रह्मर्षि स्वामी ओमानन्द सरस्वती, तथा प्राकृतिक चिकित्सा- डॉ० रघुरंजन जैन द्वारा कराया गया। ऋषिका आत्मदीक्षिता सरस्वती के आचार्यत्व में गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। शब्द विद्या, मंत्र विद्या आदि विषयों पर प्रवचन हुए। यज्ञ समापन ३० दिसम्बर को डॉ० पन्नालाल, आईपीएस के मुख्यातिथ्य में हुआ।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

फर्रुखाबाद (केशवचन्द)। आर्यसमाज कायमगंज फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) का वार्षिकोत्सव २६, से २८ दिसम्बर तक सम्पन्न हुआ, जिसमें आचार्य वेदप्रकाश व्याकरणाचार्य, पं० योगेशदत्त भजनोपदेशक ने मार्गदर्शन किया।

यज्ञ है श्रेष्ठतम कर्म : चड्ढा

कोटा। यज्ञों वै श्रेष्ठतम कर्म, यज्ञ ही श्रेष्ठतम कर्म है यज्ञ से वायुमण्डल शुद्ध, पुष्ट एवं सुगंधित है। यज्ञ से संसार में शांति एवं सद्भाव प्रसारित होकर पृथ्वी स्वर्ग बनती है, यज्ञ से वर्षा होती है एवं अतिवृष्टि नियंत्रित होती है। उक्त विचार आर्यसमाज के जिलाप्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने आर्य समाज गायत्री विहार की ओर से बजरंग नगर स्थित ब्राइटलैंड सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल में आयोजित यज्ञ कार्यक्रम में व्यक्त किए। उक्त यज्ञ कार्यक्रम में आर्य विद्वान अरविन्द पाण्डेय व उमेश कुर्मी के सानिध्य में देवयज्ञ किया गया। जिसमें मुख्य यजमान मन्नूभाई आडे व लीला आडे एवं मुख्य अतिथि ब्रिजेश शर्मा नीटू, आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी गंगाधर मीणा, पूर्व जिला खेल अधिकारी विनय मेहता, समाजसेवी जी.डी. पटेल व अन्य उपस्थित महिला, पुरुषों ने विश्व शांति की कामना करते हुए आहुतियां डालीं। ब्रिजेश शर्मा नीटू ने कहा यज्ञ करने वाला धार्मिक व परोपकारी होता है वह समाज को दिशा देता है तथा उसका जीवन अनुकरणीय होता है। गंगाधर मीणा ने कहा कि हमें इस प्रकार के धार्मिक आयोजनों के साथ जुड़कर गति प्रदान करनी चाहिए। जीडी पटेल ने कहा कि यज्ञ के कार्यक्रम होते रहने से वातावरण शुद्ध होता है तथा यज्ञ कर्ता व उसके आसपास के क्षेत्र में रहने वालों को भी इसका लाभ मिलता है। इस अवसर पर नवनिर्वाचित पार्षद ब्रिजेश शर्मा नीटू, आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, आर्य समाज गायत्री विहार के प्रधान अरविन्द पाण्डेय तथा मंत्री उमेश कुर्मी ने चार बार अंतर्राष्ट्रीय आर्यमहासम्मेलन में भाग लेने वाले आर्य दम्पत्ति का साफा पहनाकर व शॉल औढ़ाकर सम्मान किया गया। उपस्थित सभी ने सस्वर गायत्री पाठ का उच्चारण किया तथा शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ तत्पश्चात सभी के लिए सहभोज की व्यवस्था भी की गई थी।

आर्य समाज, कांठ का ९७वां वार्षिकोत्सव

अशोक कुमार विश्नोई
कांठ (मुरादाबाद)।

आर्य समाज कांठ, जि०- मुरादाबाद का ९७वां वार्षिकोत्सव विराट आर्य सम्मेलन के रूप में 4 व 5 फरवरी को मनाया जाएगा, जिसमें दोनों दिन यज्ञ, अनुष्ठान, गीत-संगीत, भजनोपदेश के कार्यक्रम होंगे। 4 फरवरी को ११ बजे से शोभायात्रा भी निकाली जाएगी, जो दयानन्द बाल विद्या मन्दिर से प्रारम्भ होगी।

शहीदों की शहादत

मुकेश कुमार, आगरा

शहीदों की शहादत कभी बेकार नहीं जाती।
हर हाल में हमको कुछ न कुछ दे जाती।।
कर्तव्य हमारा है, हम न भुलाएं उनको,
जिन्होंने हमें बचाने को निज कुर्बानी दी।
शहीदों की शहादत कभी बेकार नहीं जाती।
हर हाल में इतिहास नया रच जाती।।

हकीम सैयद हुसैन नकवी

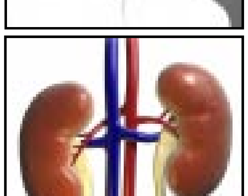

अलबारी दवाखाना

क्या आप इनमें से किसी भयंकर रोग से पीड़ित हैं, तुरंत संपर्क करें
विशेषज्ञ:- गुर्दा, केंसर, गुप्त रोग एवं हृदय
नोट:- मस्तिष्क केंसर रोगी न मिलें

पता:- मोहल्ला लकड़ा निकट सब्जी मंडी अमरोहा-२४४२२१
(मो०नं०-०९९१७३५८३४२)

: विज्ञापन कॉलम :

इस कॉलम में अपने प्रतिष्ठान अथवा संस्थान के क्रियाकलापों तथा उपलब्धियों एवं जन्मदिन, वर्षगांठ तथा विभिन्न पर्वों पर शुभकामनाओं के प्रकाशन के लिए तुरंत सम्पर्क करें और अधिक से अधिक लाभ उठाएं। चलभाष- 09758833783, 09412139333

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए और चुनिए एक सुयोग्य जीवन साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 350/- तथा तीन बार की रु. 500/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, उ.प्र. (चलभाष : 08273236003)

आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रिंटर्स, अमरोहा

द्वारा मुद्रित तथा आर्य उपप्रतिनिधि सभा, अमरोहा द्वारा प्रकाशित बहुमूल्य व जीवनोपयोगी पुस्तकें आज ही मंगाएं

56 पृष्ठ, रंगीन आवरण, उत्तम कागज युक्त पुस्तक

अर्चना यज्ञ पद्धति

मूल्य- 12 रु. (800 रु. सैंकड़ा)

▯ हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आर्य समाज का योगदान

अपने आर्यसमाज, स्कूल-कालेज के उत्सवों, विशेष पर्वों, विभिन्न समारोहों में वितरण करने हेतु आज ही मंगाएं।

मूल्य : दो सौ रु० सैंकड़ा

अवश्य पढ़िए- आज ही मंगाईये संग्रहणीय पुस्तकें

▯ रामायण का वास्तविक स्वरूप

मूल्य- २०/-

▯ यज्ञ और पर्यावरण

मूल्य : 3 रु. (200 रु. सैंकड़ा)

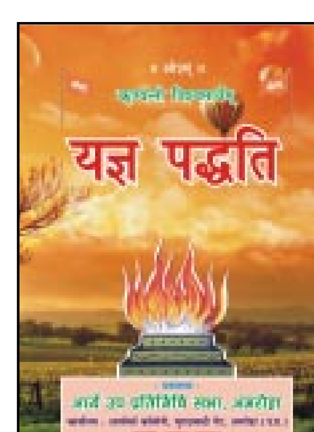

यज्ञ पद्धति

पृष्ठ 120, रंगीन आवरण, उत्तम कागज, आकर्षक कलेवर युक्त एक विशेष पुस्तक

आर्यपर्वों, जन्मदिन, वर्षगांठ, जयन्ती, उद्घाटन, विमोचन आदि के विशेष मंत्रों के साथ दैनिक व विशेष यज्ञ पर सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रमाणित यज्ञ पद्धति पर आधारित एक श्रेष्ठ पुस्तक।

मूल्य : ३५ रुपये

समस्त पुस्तकें बिक्री हेतु निम्न पते पर उपलब्ध हैं

डॉ. अशोक कुमार आर्य
आर्यावर्त प्रकाशन
कार्यालय : आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ०प्र०),
दूरभाष : 05922-262033
चलभाष- 09758833783, 09412139333

भ्रष्टाचार एक अभिशाप

भ्रष्टाचार आज भारत ही नहीं, पूरे विश्व में फैलता जा रहा है। क्योंकि भ्रष्टाचार को रोकने के लिए जो कानून बने हैं उनमें संशोधन की आवश्यकता है। क्योंकि जब तक भ्रष्टाचारियों के खिलाफ कोई कार्यवाही की जाती है, तब तक वे अपने पद एवं पहुंच का दुरुपयोग कर अपने खिलाफ तैयार किये हुए सबूतों को हटा देते हैं या दबा देते हैं। उनके खिलाफ जो गवाह होते हैं, उनको बहला-फुसला कर पक्ष में कर लिया जाता है, जिसके कारण भ्रष्टाचार फैलता जा रहा है। इसको रोकने के जो प्रयास किये जाते हैं, वे भी नाम मात्र के होते हैं। मुख्यत: भ्रष्टाचार राजनेताओं व राजनीतिक पार्टियों एवं सरकारी कर्मचारियों द्वारा फैलाया जा रहा है। कई बार जनता अपने फायदे के लिए भी भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है, जैसे किसी व्यक्ति द्वारा यातायात के नियमों का उल्लंघन किया जाता है, कई तो बच निकलते हैं और कई व्यक्तियों द्वारा पुलिस से बचने का प्रयास किया जाता है और कुछ अधिकारियों द्वारा बिना चालान के कुछ रुपये देकर उन्हें छोड़ दिया जाता है।

भ्रष्टाचार को इसी तरह बढ़ावा मिल रहा है। आज सरकारी कर्मचारियों के द्वारा ही भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है। यहां हम आरटीओ ऑफिस का उद्धरण लेते हैं। यदि कोई व्यक्ति ड्राइविंग लाइसेंस बनवाने जाता है, तो सब शर्तों को पूरा करने के बावजूद भी उसमें कई कमियां निकाल दी जाती हैं। अन्तत: उसे विवश होकर दलाल को ज्यादा रुपये देकर कार्य करवाना पड़ता है, यह सर्वविदित है कि इसमें कार्यालय के कर्मचारियों का हिस्सा होता है।

राजनीति में बहुत कम ऐसे लोग हैं, जो भ्रष्टाचार से ग्रसित नहीं होते हैं। आजकल का कोई नेता ही ऐसा होगा, जो ईमानदार हो। आजकल बहुत से अधिकारी अपने संबन्धियों को ऐसा कार्य देते हैं, जिससे वे अत्यधिक लाभ कमा सकें।

कुछ समय पूर्व एक सर्वे में बताया गया था कि सरकार से जो रुपया किसी कार्य हेतु आवंटित किया जाता है, उसका बड़ा हिस्सा भ्रष्ट राजनेताओं और अधिकारियों की जेब में चला जाता है, जनता के लिए २० से ३० प्रतिशत ही पैसा खर्च होता है। पिछले दिनों हुए घनघोर घोटालों, जैसे- टूजी स्पैक्ट्रम घोटाला, सारधा घोटाला, राष्ट्रमण्डल खेल घोटाला, कोयला घोटाला, और न जाने कितने बड़े घोटालों से देश शर्मसार हो चुका है। जो पैसा जनता के विकास में लगना चाहिए था, वह चन्द सफेदपोश नेताओं व भ्रष्ट अधिकारियों की जेबों में चला गया। और इससे भी ज्यादा हैरत की बात यह है कि किसी भी आरोपी को दण्ड नहीं मिल सका है।

आज भ्रष्टाचार को रोकने के लिए जनता को जागरूक होना होगा। आजादी के लगभग 68 साल के बाद भी भ्रष्टाचार दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। शासन से तंत्र तक सर्वत्र भ्रष्टाचार के गंदले प्रवाह में सभी डूबते नजर आ रहे हैं। कुछ लोगों के जागरूक होने से भ्रष्टाचार खत्म नहीं होगा, प्रत्येक व्यक्ति के जागरूक होने पर ही भ्रष्टाचार खत्म होगा। जो देश कभी अपनी नैतिकता और शुचिता के लिए विश्व भर में विख्यात था, आज उसकी गिनती दुनिया के भ्रष्टतम देशों में हो, निश्चय ही यह घोर चिन्तनीय है। अत: सरकार को चाहिए कि इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाते हुए भ्रष्टचार पर लगाम लगाने हेतु भ्रष्टाचारियों को कड़ी से कड़ी सजा दे, जिससे भारत फिर से समृद्ध हो, और अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को प्राप्त करते हुए सोने की चिड़िया की संज्ञा को भी प्राप्त कर सके।

मकर संक्रान्ति की सही तिथि जनवरी नहीं, २२ दिसम्बर

सुमन कुमार 'वैदिक'

आज आर्यों द्वारा ज्योतिष ज्ञान से दूरी बना लेने से यह ज्ञान स्वार्थी ज्योतिषाचार्यों के पास पहुंच गया है। जिन्होंने पंचांग के मूल स्वरूप को बदल दिया, जिस कारण हम अपने ऋतु-आधारित पर्व गलत तिथियों तथा ऋतुओं में मनाने लगे। मकर संक्रान्ति, बैसाखी, वसंत पंचमी इत्यादि उन ऋतुओं में नहीं मनाते, जिनमें मनानी चाहिए।

आर्यों की दृष्टि भी कभी इस ओर नहीं गयी कि जिस प्रकार हमारे साहित्य को प्रक्षेपित किया गया है, उसी प्रकार तिथि पत्रक को भी त्रुटिपूर्ण बना दिया गया है। उन्होंने वेदों के एक उपांग ज्योतिष को फलित ज्योतिष समझ, अन्धविश्वास मानकर अध्ययन नहीं किया, जिससे यह विद्या अज्ञानियों के पास पहुंची तथा वह इससे समाज को मूर्ख बनाने लगे।

वेदों का अनुसरण न करने का सनातन भाइयों पर आरोप लगाने वाले आर्यों ने भी वेद को ध्यान से नहीं पढ़ा, अन्यथा ऐसा अनर्थ न होता। यजुर्वेद में मधु, माधव, शुक्र, शुचि, नमस, नभस्य, ईस ऊर्ज, सहस्, सहस्य तपस, तपस्य इन बारह सौर मासों का वर्णन है। वेद का अध्ययन न होने से सौर मासों का प्रचलन समाप्त हो गया, और समाज में चान्द्र मासों- चैत्र, वैसाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, माघ, पोष, फाल्गुन को अपना लिया। क्योंकि शासक वर्ग मुस्लिमों का कलैण्डर भी चांद से चलता था।

चन्द्रमा से ऋतु का निर्धारण नहीं हो सकता। जिस प्रकार मुसलमानों के पर्व ऋतु अनुसार नहीं पड़ते, हमारे भी महीनों का निर्धारण वेदानुसार न होने से गलत ऋतुओं में पड़ने लगे।

वैदिक वांग्मय में ब्राह्मण ग्रन्थों में आमन्त मास अर्थात् माह का अन्त अमावस्या के दिन होना चाहिए। पूर्णिमा शब्द वहां नहीं है। आज हम माह का अन्त पूर्णिमा से तथा प्रारम्भ कृष्ण पक्ष से करते हैं। इन गलत तिथियों में निर्धारित पर्व का संज्ञान त्रुटिपूर्ण क्यों नहीं होगा? यद्यपि भारत में अनेक स्थानों में आज भी माह का प्रारम्भ अमावस्या के पश्चात् अर्थात् शुक्ल पक्ष से करते हैं। वर्ष का प्रारम्भ तो हम भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से करते हैं, किंतु माह को कृष्ण प्रतिपदा से।

वेदों में राहू, केतु ग्रहों तथा राशियों का वर्णन कहीं नहीं आता, जबकि सूर्य, चन्द्रमा का वर्णन अनेकों बार आता है। इसके साथ पूर्णिमा, अमावस्या तथा २८ नक्षत्रों का वर्णन भी आया है। अथर्ववेद १९/७/२, पुन: १९/८/१ में नक्षत्र पूर्वा भाद्रपद से शतभिष तक २८ हैं, जिसमें हमने अभिजित नक्षत्र को छोड़ दिया है। और २८ के स्थान पर २७ नक्षत्र अपनी सुविधा के लिए मान लिए। क्योंकि १४० का २७ से भाग हो जाता है, जिससे ज्योतिषियों ने समान परिमाप का मान लिया, जबकि ऐसा असंभव है।

हमारे यहां मकर संक्रान्ति की तिथि पर बड़ा असमंजस है। बाल गंगाधर तिलक के पंचांग में १० जनवरी को वी०वी० रमण के पंचांग से १३ जनवरी, तथा लहरी के पंचांग से १४ जनवरी तथा महीधर आदि पंचांग में १५ जनवरी को होती है। आचार्य दार्शनिय लोकेश के पंचांग जो एकमात्र शुद्ध वैदिक पंचांग है, उसके अनुसार २२ दिसम्बर को होनी चाहिए।

प्रकृति में मकर संक्रान्ति या उत्तरायण या उत्तरायण की तिथि एक दिन ही होनी चाहिए। वह दिन है २२ दिसम्बर, जिससे पूर्व २१ दिसम्बर को सबसे छोटे दिन के पश्चात् पृथ्वी सूर्य की ओर झुक जाती है, तथा दिनमान अधिक होने लगता है, जिसे उत्तरायण कहा जाता है। यदि हम मकर संक्रान्ति मनमाने ढंग से मनाते रहेंगे, तो एक दिन ऐसा होगा कि सूर्य दक्षिण की ओर चल पड़ेगा, और हम यह सोचकर इस पर्व को मना रहे होंगे कि सूर्य उत्तर की ओर चल रहा है। कुछ लोग १४ जनवरी को मकर संक्रान्ति मनाने के पीछे तर्क देते हैं कि इस दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है। भारतीय ज्योतिष में राशियों का वर्णन नहीं था, यह ग्रीक (रोमन) से भारत में आया, जो कि काल्पनिक है। प्रकृति में राशियां नहीं होती हैं, राशियों की केवल कल्पना की गयी है।

मकर संक्रान्ति पर्व का अपना पौराणिक महत्व भी है। इस दिन लोग, नदियों में स्नान करते हैं तथा सूर्य को अर्घ्य देते हैं। तिलदान, तिलस्नान, उबटन के साथ तिल की बड़ी तिलकुट इत्यादि का प्रचलन रहा है, क्योंकि यह ऋतु शीत की होती है, जिसमें दरिद्रों को कम्बल इत्यादि गर्म वस्त्रों के साथ खिचड़ी का दान किया जाता है, क्योंकि खिचड़ी की प्रकृति गर्म है।

उत्तरायण और दक्षिणायन प्रकृति में जहां होते हैं, वहीं हमारे जीवन में भी होते हैं। जीवन में ज्ञान का काल उत्तरायण तथा अज्ञान का काल दक्षिणायन होता है। वैदिक काल में ऋषि, मुनि तथा ज्ञानीजन यह विचारते थे कि जब उनकी आत्मा शरीर को त्यागे, तब उनके जीवन का उत्तरायण हो चुका हो। अर्थात् उनके जीवन में ज्ञान आ चुका हो। उनके अन्दर काम, क्रोध, अभिमान, लोभ, मोह आदि पतन करने वाले कारण न रहें तथा प्रकृति में सूर्य भी उत्तरायण आ चुका हो। भीष्म पितामह, माता मदालसा जैसे अनेकों महापुरुषों ने अपने जीवन को साधना से उत्तरायण बना, देह का त्याग किया।

ऐतिहासिक महत्व में इस दिन १७६१ में पानीपत में अहमदशाह अब्दाली और भाउराव पेशवा के मध्य युद्ध हुआ था, जिसके पश्चात् मराठा पराजित हुआ। अत: महाराष्ट्र में इसे शोकदिवस के रूप में भी मनाते हैं।

जनवाणी

गो, ग्राम व गंगा का संरक्षण हो

महोदय,

आर्यसमाज सदैव जन-आन्दोलनों में अग्रणी भूमिका निभाता रहा है। फिर क्या कारण है कि आज गो, ग्राम व गंगा के सम्बन्ध में आर्यसमाज अपनी प्रखर भूमिका में नहीं है? आज गोहत्याबन्दी के होते हुए भी गोहत्या जारी है, गंगा प्रदूषित हो रही है। आर्यसमाज को इस दिशा में आगे बढ़कर सक्रिय भूमिका का निर्वाह करना चाहिए।

जयप्रकाश वर्मा, हिरण मगरी,
(राजस्थान)

प्रकाशवीर शास्त्री का बने स्मारक

महोदय,

आपके पत्र के माध्यम से अमरोहा जनपद के प्रशासनिक अधिकारियों से अपील है कि अमरोहा जिलाधिकारी कार्यालय परिसर में पूर्व लोकसभा सदस्य स्व० प्रकाशवीर शास्त्री की प्रतिमा स्थापित करायी जाए, तथा क्षेत्र के समस्त सांसदों की फोटो जिलाधिकारी सभागार में अंकित करायी जाए, जिससे युवा पीढ़ी को प्रेरणा मिल सके। उल्लेखनीय है कि स्व० प्रकाशवीर शास्त्री लोकसभा के अत्यंत प्रतिष्ठित सदस्यों की अग्रिम पंक्ति में गिने जाते थे, तथा चीन युद्ध के उपरांत वह लोकसभा में सबसे प्रखर प्रवक्ता थे। शास्त्री जी अत्यंत साधारण परिवार के सदस्य थे। उनकी स्मृति में जनपद स्तर पर अवश्य स्मारक बनाना चाहिए।

-कृष्णमोहन गोयल कोट, अमरोहा

कृपया केसरी में इन्हें भी शामिल करें

महोदय,

आर्यावर्त केसरी समाचार पत्र में ये सामग्री भी प्रकाशित की जाए-

(१) 'भारत वर्ष (हिन्दुस्थान= आर्यावर्त) देश की सर्वगुण सम्पन्न राजनीति (राजधर्म) कैसी हो?' शीर्षक से एक स्तम्भ (कालम) खोला जाए। और राजनीति शास्त्र के विद्वानों के लेख आमंत्रित करके प्रकाशित किये जायें।

(२) रोग, स्वास्थ्य, चिकित्सा, औषधि, नाम का एक स्थाई स्तम्भ (कालम) खोला जाए। इस स्तम्भ में रोगों की अचूकतम दवाइयां प्रकाशित की जायें।

(३) 'दिनांक-दर्शिका' (कलैण्डर) प्रतिवर्ष जनवरी और चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को टिकाऊ, मोटे, मजबूत, चिकने कागज पर सचित्र छापा जायें। पृथक से छापें, मूल्य से दिया करें। विक्रमी संवत् की तिथियां, अमावस्या व पूर्णिमा, मोटे-मोटे लाल इंक में छापें, ईस्वी सन् की तारीखें, दिन, सभी के त्योहार, महापुरुषों के जन्मदिन, पुण्य तिथि, चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण कब से कब तक पड़ेंगे (समय) आदि भी छापी जाएं।

-अभिलाष सिंह गौड़, पचौमी, जि०- बरेली

सृष्टि का सही गणनाक्रम

आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित सृष्टि के गणनाक्रम पर प्रतिक्रिया

आचार्य दार्शनेय लोकेश

आर्यावर्त केसरी के एक विशेषांक में वैद्य आनन्द प्रकाश आर्य, भोजपुर खेड़ी, बिजनौर का 'सृष्टि का सही ग्रणनाक्रम' नामक लेख पढ़ा। आखिर कब तक आर्य समाज के लोग इस विषय से जुड़े भ्रम का दामन पकड़े रहेंगे। मैं यहां विषयान्तर्गत कुछ तथ्यों को उजागर करना चाहता हूं। सर्वप्रथम श्री वैद्य के लेख में आई हुई तीन विषम उक्तियों पर चर्चा की जाए। पहली बात संकल्प मंत्र के सन्दर्भ में-

१. ''........ शुभ कार्य अवसर पर पुरोहित कर्म कर्ता से उच्चारित कराता आ रहा है......''

वस्तुत: ऐसा नहीं है। ये कहना स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज के ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका (ऋभाभू) में दिए कथन से ठीक उल्टा कथन है। समाज को भ्रामक दिशा देता है।

स्वामी जी के अनुसार प्रत्येक वैदिक व्यक्ति के लिए संकल्प पाठ का पहला उद्देश्य ''कुतो हि अयं नित्यम् अर्थात् आज का दिन कौन है'' इसे ठीक-ठीक जानने की, ज्योतिष शास्त्र सम्मत, नित्य चर्या है। किसी शुभ कार्य का कर्मकाण्ड की या किसी परिवार या संगठन की नहीं, अपितु प्रत्येक व्यक्ति की दैनिक चर्या है- यह संकल्प पाठ। अगर आर्यजन ऐसा नहीं कर रहे हैं, तो ये उनका पतन है, अनार्यत्व है।

२. ''....ब्रह्म दिन का समय एक हजार चतुर्युगियों में तथा १४ मन्वन्तरों के अन्तर्गत विभक्त है....''

वास्तव में ऐसा भी नहीं है। १००० चतुर्युगी केवल १४ मन्वंतरों में पूर्ण विभाजित हो ही नहीं सकती हैं। सत्य यह है कि १४ मन्वंतर और १५ सन्धियां अर्थात् १४ x ७१+१५x १७२८०० बराबर होता है एक हजार चतुर्युगियों (१००० x ४३२००००) के। इसी बात को सूर्य सिद्धांत (१/१९) में इस प्रकार विवेचित किया गया है- ससन्ध्यस्ते मनव: कल्पे ज्ञेयाश्चतुर्दश:। कृतप्रमाण: कल्पादौ सन्धि: पञ्चदश: स्मृत:।।

३. ''....शेष 6 का आधा समय सृष्टि के निर्माण तथा खण्डित होने में लगता है....''

पहली बात तो ये है कि ऐसा कहां और किस शास्त्र में लिखा है और उस लिखे का सन्दर्भ श्री वैद्य ने क्यों नहीं दिया है? वास्तव में ऐसा कोई सन्दर्भ है भी नहीं। उनको समझ लेना होगा कि सृष्टि-निर्माण में लगे समय के बाद जब सब कुछ प्रचलन में आ चुका होगा, तो उतना समय छोड़कर क्या सृष्ट्यादि (सृष्टि का आरम्भ) का समय तब माना जाएगा? कुछ लोग तो और भी आगे बढ़कर यहां तक कहते हैं कि महर्षि जी ने जो 'सृष्ट्यादि' कहा है, वह उन्होंने मानव सृष्ट्यादि के लिए कहा है। अगर स्वामी जी को यही अभिप्रेत होता, तो वे मानव सृष्ट्यादि ही लिखते। उसके स्थान पर सृष्ट्यादि क्यों लिखते? एक अन्य सज्जन कहते हैं कि वेदोत्पत्ति मनुष्य उत्पत्ति के लिए ही है। जब मनुष्य हो चुका होगा, तब वही तो कालगणना को शुरु करेगा। उनकी दृष्टि में मानव उत्पत्ति से पूर्व जो जल, थल, पवन, प्रकाशादि रहा होगा, वह तो जैसे कि सृष्टि के आवश्यक अंग नहीं थे। अस्तु मेरे लिए अतीव आवश्यक है कि मैं सर्वदा स्मरणीय श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के स्वयं के कहे कुछ कथनों (ऋभाभू से) को आर्यावर्त केसरी के पाठकों की जानकारी या सूचना हेतु चित्रित करूं। सम्भव है कि समाज में एक सद्बुद्धि का विकास हो पाए।

१. जैसे मनुष्य के शरीर से श्वास बाहर को आकर फिर भीतर को जाता है, उसी प्रकार सृष्ट्यादि के आदि में ईश्वर वेदों को उत्पन्न करके संसार में प्रकाश करता है, और प्रलय में संसार में वेद नहीं रहते। परन्तु उसके ज्ञान के भीतर वे (अर्थात् ईश्वर में वेद) सदा बने रहते हैं, बीजांकुरवत्। कोष्ठ में लिखे चार शब्द मेरे अपने हैं।

२. वेद ईश्वर के ज्ञान में सर्वदा बने रहते हैं। उनका नाश कभी नहीं होता, क्योंकि वह ईश्वर की विद्या है। इससे उसको नित्य ही जानना।

३. सृष्टि के आदि में (कृपया इन चार शब्दों पर विशेष ध्यान दें) भी परमात्मा, जो वेदों का उपदेश नहीं करता, तो आज पर्यन्त किसी मनुष्य को धर्मादि पदार्थों की यथार्थ विद्या नहीं होती।

4. जानना चाहिए कि उन्हीं चार पुरुषों (अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा) को ऐसा पूर्व पुण्य था जिनके हृदय में वेदों का प्रकाश किया गया।

5. जिसने ब्रह्मा को उत्पन्न किया, और ब्रह्मादि को सृष्टि के आदि में अग्नि आदि के द्वारा वेदों का उपदेश भी किया है, उसी परमेश्वर की शरण को हम लोग प्राप्त होते हैं।

6. पूर्वोक्त अग्नि, वायु, रवि और अंगिरा से ब्रह्मा ने वेद पढ़े थे।

७. एक हजार चतुर्युगियों की ब्राह्मदिन संज्ञा रखी है, और उतनी ही चतुर्युगियों की रात्रि संज्ञा जानना चाहिए। सो सृष्टि की उत्पत्ति करके हजार चतुर्युगी पर्यन्त ईश्वर इसको बना रखता है। इसी का नाम ब्राह्मदिन रखा है। यह 'ब्राह्मदिन' शब्द विशेष ध्यातव्य है। इसी की कुल अवधि १००० x ४३२०००० सेवत हैं, और यह भी कि इसके अन्तर्गत किसी भी कालखण्ड में भुक्त और भोग्य वर्षों का कुल योग हमेशा एक हजार चतुर्युगी के बराबर ही होगा।

8. क्योंकि जैसा प्रथम लिख आये हैं, जब पर्यन्त हजार चतुर्युगी व्यतीत न हो चुकेंगी, तब पर्यन्त ईश्वरोक्त वेद का पुस्तक, यह जगत और हम मनुष्य लोग भी ईश्वर के अनुग्रह से सदा वर्तमान रहेंगे। (यहां भी, स्वामी जी के अनुसार सिद्धांत भुक्त+ भोग्य वर्षमान का कुल योग एक हजार चतुर्युगी के बराबर ही होना अति आवश्यक है)।

आशा है उपरोक्त सभी तथ्यों से पाठकवृन्द, जिनमें कि श्री वैद्य भी शामिल हैं, सृष्टि आदि से कालगणना के यथार्थत्व को ठीक-ठीक से समझ पाएंगे। इस गणना का ठीक-ठीक हिसाब मैंने अपने वैदिक पंचांग ''श्री मोहनकृति आर्ष तिथि पत्रक'' सं० २०७१ के पृष्ठ १४ पर स्पष्ट किया है। सभी को चाहिए कि इस पंचांग को अवश्य ही प्राप्त करें, और कालगणना ही नई विविध पंचांगीय तथ्यों को भी ठीक से समझ लेने का सफल प्रयास करें। अब तक सृष्ट्यादि से १९७२९४९११५ वर्ष बीत चुके हैं। अस्तु ये ही गतवर्ष हुए। इस ब्राह्मदिन के २३४७०५०885 वर्ष भोग्य वर्ष कहे जाएंगे। सम्प्रति सृष्ट्यादि से १९७२९४९११६वां संवत् चल रहा है।

सम्पादक-श्री मोहन कृति 'आर्ष तिथि पत्रक'
सी- २७६, गामा-१, ग्रेटर नोएडा (उ०प्र०)- २०१३१०
फोन : ०१२०- ४२७१४१०

पीपल और बरगद

समस्त हिन्दू संस्कृति के उपासकों से नम्र निवेदन है कि लुप्त होते पीपल और बरगद के वृक्षों के संरक्षण और पोषण की ओर जगारूकता प्रदान करने का प्रयास करें। यह सर्वविदित है कि पीपल और बरगद के वृक्ष पर्यावरण के सर्वोच्च मानक हैं। केवल भारत में ही नहीं, अपितु श्रीलंका, थाईलैण्ड, चीन, नेपाल आदि देशों में भी पर्यावरणविद इनको संरक्षण प्रदान करते हैं। हमारा समस्त हिन्दू धर्मप्रेमियों से अनुरोध है कि परिवार में धार्मिक अनुष्ठान के अवसर पर पीपल या बरगद के पेड़ों का रोपण करें और अन्यों को प्रेरित करें। स्वस्थ देश समय की मांग है। हिन्दू संस्कृति का यह प्रमुख प्रतीक है।

-कृष्णमोहन गोयल, अमरोहा

एक योगी थे महर्षि दयानन्द सरस्वती

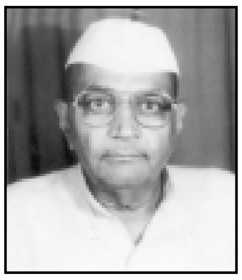

हरिश्चन्द्र आर्य

स्वामी दयानन्द सरस्वती एक महान योगी थे। उन्होंने २१ वर्ष की आयु में योग सीखने के लिए घर छोड़ा था।

उन्होंने योगानन्द से योग सीखा, और आगे के पाठ ज्वालानन्द गिरि एवं शिवानन्द गिरि से सीखे। वे आबू पर्वत पर उच्च कोटि के योगियों से मिले, और उनसे योग के रहस्य सीखे। वे हरिद्वार के निकट चण्डी पर्वत के जंगलों में योग करते रहे, और ऋषिकेश में पवित्र योगियों एवं संन्यासियों के सान्निध्य में योग सीखते एवं साधना करते रहे। बद्रीनारायण के रास्ते में जोशीमठ में वे बहुत से योगियों से मिले, और योगविद्या के संबन्ध में बहुत सीखा। वे अठारह घंटे की समाधि लगाने में सक्षम थे। भविष्य में होने वाली घटना को वे देख लेते थे।

उनके जीवन की कितनी ही घटनाएं बताती हैं कि वे योगी थे-

१. जून 1866 में अजमेर में प्रार्थना समाज के बाबू श्यामलाल सिंह के घर से कुछ दूध लाया गया। स्वामी जी ने इसे ग्रहण करने से मना कर दिया, और कहा कि यह दूध अनिच्छा से भेजा गया है। अत: मैं उनके परिवार में अनबन नहीं कराना चाहता। श्यामलाल सिंह ने जब इसे पहली बार सुना तो उन्हें आश्चर्य हुआ। परन्तु बाद में पता चला कि उनकी मां ने साधु के लिए दूध भेजने पर आपत्ति की थी।

२. एक दिन स्वामी जी ने अपने रसोइए से कहा कि तेरे पिताजी तुझे लेने आ रहे हैं। राजनाथ बाहर गया, परन्तु वहां न तो उसके पिताजी थे, न कोई और। आधे घण्टे बाद राजनाथ के पिताजी आ गये और उससे घर चलने को कहा।

३. एक दिन १८७२ ई० में जब स्वामी जी कुछ लोगों के साथ बैठे थे। तो अचानक रुक कर बोले कि कोई विशेष घटना होने वाली है। थोड़े समय बाद एक व्यक्ति भोजन लाया और स्वामी जी से खाने को कहा। स्वामी जी ने वहां बैठे सभी लोगों से कहा कि यह भोजन विषैला है। स्वामी जी ने उस व्यक्ति से फिर कभी ऐसी हरकत न करने को कहा।

4; बुलन्दशहर में कोई नन्दकिशोर स्वामी जी के लिए कुछ सब्जी लाये। स्वामी जी ने उन्हें लेने से मना कर दिया, क्योंकि वह चोरी की थी। वह वास्तव में मालिक की बिना आज्ञा के रास्ते से तोड़कर लाये थे।

5. १८७७ ई० में लाहौर में उन्होंने अपने एक शिष्य गणपतराय से कहा कि वह तीस वर्ष से अधिक नहीं जिएगा। अत: उसे विवाह न करना चाहिए। गणपतराय ने विवाह न करने का निश्चय कर लिया। परन्तु उसके पिताजी ने उस पर दबाव डालकर विवाह कर दिया। २८ वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गयी। यह घटना गणपतराय के भाई राताचन्द ने मुजफ्फरपुर में पंडित केशवराम को सुनाई थी।

6. अमृतसर में जब स्वामी जी वेदभाष्य लिख रहे थे, तो अचानक कमरे से बाहर आये, और अन्य लोगों को भी बाहर आने को कहा। लोग आश्चर्यचकित रह गये। कुछ मिनटों बाद ही कमरे की छत गिर गयी।

७. उदयपुर में १८८२ ई० में स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने स्वामी जी को झील की सतह पर पानी के ऊपर समाधिस्थ बैठे देखा। एक बार उन्होंने स्वामी जी को २४ घण्टे की समाधि लगाये देखा था।

8. कर्नल अलकाट ने स्वामी जी की मृत्यु के बाद थियोफिस्ट में शोक सन्देश में कहा था कि स्वामी जी ने मुझसे कुछ वर्ष पूर्व कहा था कि वे १८८३ ई० का अन्त नहीं देख पाएंगे।

9. उदयपुर में जब स्वामी जी के साथ महामहिम महाराणा उदयपुर, स्वामी सहजानन्द व कुछ अन्य व्यक्ति बैठे थे, तो स्वामी जी ने अचानक कहा कि सेठ सुन्दरलाल जी आ रहे हैं। वह यदि पहले से कहते, तब स्वामी का प्रबन्ध कर दिया जाता। महाराणा ने कहा कि सवारी तो अभी भी भिजवाई जा सकती है। स्वामी जी ने कहा कि इस समय तो वह बैलगाड़ी से आ रहे हैं। वह कल यहां पधारेंगे। सेठ सुन्दरलाल अगले दिन उदयपुर पहुंचे।

-अधिष्ठाता उपदेश विभाग
प्रचार कार्यालय,
अमरोहा (उ०प्र०)
फोन : ०९४१२३२२४८८

महर्षि दयानन्द द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में भूमिकाओं की आत्मिक झलक

पं० उम्मेद सिंह विशारद

महाभारत काल के पश्चात् महर्षि दयानन्द जी पहले लेखक थे, जिन्होंने प्राचीन ऋषियों की शैली में प्रश्नोत्तर में अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश लिखा है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिकाओं की सम्पूर्ण ग्रन्थ में अपने आत्मीय विचारों का निचोड़ दिया है, और हजारों आर्ष ग्रन्थों के प्रमाण दिये हैं। प्रत्येक धर्मशील, कर्मशील, धर्मप्रचारक व आर्य को सत्यार्थ प्रकाश के पठन से पूर्व भूमिकाओं का अवश्य स्वाध्याय करना चाहिए।

महर्षि भूमिका में लिखते हैं कि मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है, उसको सत्य और जो मिथ्या है, उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहता जो सत्य के स्थान में असत्य, और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाए। किंतु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य कहलाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य, और दूसरे विरोधी मत वाले सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है। इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता।

मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह, और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़, असत्य से झुक जाता है। परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रखी है, और न किसी का मन दुखाना व किसी की हानि का तात्पर्य है, किंतु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो। सत्य-असत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।

यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतों में हैं, वे पक्षपात छोड़कर स्वतंत्र सिद्धांत अर्थात् जो-जो सबके अनुकूल उनका ग्रहण जो एक-दूसरे के विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें-वर्त्ताएं, तो जगत का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेकविध दुख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने, जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है, सब मनुष्यों को दुख-सागर में डुबा दिया है। यदि सब मनुष्य और विशेष विद्वत्जन ईर्ष्या-द्वेष छोड़कर सत्य-असत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें, तो हमारे लिए ये बात असाध्य नहीं है।

जब विद्वान लोगों में सत्य-असत्य का निश्चय नहीं होता, तभी अविद्वानों को महा अंधकार में पड़कर बहुत दुख उठाना पड़ता है। इसलिए सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद व लेखन करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है। यदि ऐसा न हो, तो मनुष्यों की उन्नति कभी न हो। यह बौद्ध-जैन मत का विषय बना। इनके अन्य मत वालों को अपूर्व लाभ और बोध कराने वाला होगा, क्योंकि ये लोग अपनी पुस्तकों में किसी अन्य मत वाले को देखने, पढ़ने व लिखने को नहीं देते।

भला यह किन विद्वानों की बात है कि अपने मत की पुस्तक आप ही देखना, और दूसरों को न दिखाना। इसी से विदित होता है कि इन ग्रन्थों को बनाने वालों को प्रथम ही शंका थी कि इन ग्रन्थों में असंभव बातें हैं, जो दूसरे मत वाले देखेंगे, तो खण्डन करेंगे और हमारे मत वाले दूसरों का ग्रन्थ देखेंगे, तो इस मत में श्रद्धा नहीं रहेगी।

सब मनुष्यों को उचित है कि सबके मत विषय पुस्तक को देखकर कुछ सम्मति व कुछ असम्मति देवें व लिखें, नहीं तो सुना करें। क्योंकि जैसे पढ़ने से पण्डित होता है, वैसे सुनने से बहुश्रुत होता है। यदि श्रोता दूसरे को नहीं समझा सके, तथापि आप स्वयं तो समझ ही जाता है।

यदि एक मत वाला दूसरे मत के विषय को जाने, और न जाने तो यथावत् संवाद नहीं हो सकता, किंतु अज्ञानी किसी भ्रमरूप बाढ़े में गिर जाते हैं। ऐसा न हो, इसलिए इस ग्रन्थ में प्रचलित सब मतों का विषय थोड़ा-थोड़ा लिखा है।

इससे जो कुछ विरुद्ध लिखा गया हो, तो लोग विदित कर देंगे। पश्चात् जो उचित होगा, तो माना जाएगा, क्योंकि यह लेख हठ, दुराग्रह, ईर्ष्या, द्वेष, वाद-विवाद और विरोध घटाने के लिए किया गया है, न कि इनको बढ़ाने के अर्थ। क्योंकि एक-दूसरे की हानि करने से पृथक् रह, परस्पर को लाभ पहुंचाना हमारा मुख्य कर्म है।

-गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून

मोबा० : ०९४११५१२०१९

कर्त्तव्य और अधिकार

अतुल कुमार शुक्ला, मुरादाबाद

बदलते समाज, बदलते परिवेश में बढ़ती महिलाओं की भूमिका परिवर्तनशील है। निरंतर परिवर्तन के चक्र पर सवार विकास की ओर अग्रसर होता रहता है। महती समाज पुरुष प्रधान रहा है। किंतु यदि आज के संदर्भ में देखा जाए, तो यह कहना गलत न होगा कि महिलाओं की मेहनत रंग ला रही है।

आज के इस बदलते स्वरूप में देखा जाए, तो पुरुषों की हिस्सेदारी में महिलाओं की भागीदारी भी बढ़ रही है। समय के साथ महिलाओं में आए बदलाव को सुखद अनुभूति के रूप में देखा जा सकता है, और इस बदलाव में महिलाओं की सकारात्मक रूप से बदलने में मदद की है, जैसे स्त्री-पुरुष का समान वेतन, उच्च शिक्षा का अधिकार, वोट देने का अधिकार, पैतृक सम्पत्ति पर हक, नौकरी करने की आजादी, बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं, अपनी पसंद का कैरियर चुनने की आजादी कम सन्तानोत्पत्ति का निर्णय का अधिकार आदि।

उन सब अधिकारों व हितों के प्रति आज की नारी पूर्णतया सजग हो गयी है, जिससे उसके आत्मविश्वास को बल मिला है। कुछ कर गुजरने का जुनून जगा है, आगे बढ़ने की शक्ति मिली है। आज हर क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका पुरुषों के समकक्ष है। चाहे राजनीति हो, या अर्थव्यवस्था, परिवार हो या समाज, किचिन हो या फिर डिफेंस, हर क्षेत्र में महिलाओं ने अपनी पकड़ मजबूत बनाने की ठानी हुई है। पहली महिला आइपीएस अधिकारी किरण बेदी की सफलता अन्य महिलाओं के लिए आदर्श बनी हुई है। अपनी अर्जित उलब्धियों के कारण ही आज की नारी समाज में अपना हिस्सा बना रही है। जो नारी किसी समय टेलीफोन की घंटी से चौंक जाया करती थी, वही आज मोबाइल से देश-विदेश में बात करती है। इंटरनेट के जरिए पूरी दुनिया से जुड़ी है। ड्राइविंग का आनन्द भी बखूबी उठा रही है।

आज महिलाएं इंवेस्टमेंट के लिए स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम हैं, जो महिलाएं कभी घर खरीदने का सपना बिना पुरुष के साथ के पूरा नहीं करने का सोच पाती थीं, वे आज स्वतंत्र निर्णय लेकर प्रोपर्टी खरीदने-बेचने का कार्य कर रही हैं। अपने नाम से अपना बैंक-बैलेंस बना रही हैं। अपनी सुरक्षा के प्रति काफी सजग व सतर्क हैं। शेयर मार्केट जैसी जगहों पर भी महिलाएं अपना स्थान बना चुकी हैं। देश के विकास के लिए महिलाओं का सम्मान अति आवश्यक है।

डायबिटीज में तीन काम

डायबिटीज मधुमेह या शुगर की बिमारी या यूँ कहें, इस रोग में ऊर्जा, शक्ति, पावर, एनर्जी का शरीर में उपयोग नहीं हो पा रहा है वह वैसे ही यूरीन के माध्यम से निकली जा रही है। जो निकल नहीं पा रही है वह रक्त में घूम रही है। इस बीमारी को ठीक करने के लिए तीन काम करने हैं। डायबिटीज को तीन तत्व ठीक करते हैं –

(1) **भोजन**–भोजन ऐसा करें जो एकदम ऊर्जा नहीं देवे। तुरन्त ऊर्जा नहीं दे धीमी गति से ऊर्जा देवे। शरीर को जितनी ऊर्जा की जरूरत हो इनसे ग्रहण कर लेवे अनावश्यक नहीं।

जैसे– (i) अंकुरित मूंग, मेथी, मौठ, मटर, सोया, मूंगफली का सेवन करें।

(ii) मिक्स आटे की रोटी, जौ, ज्वार, बाजरा, मक्का, गेहूँ, चना। ऐसे फल खावें जिसमें डायरेक्ट मिठास नहीं है। जैसे–आंवला, नींबू, जामुन, जामफल, ज्वार, सेब, अनार, नासपाती, नाग, आलूबुखारा।

ऐसी सब्जियाँ खावें जो सहज पच जावे भारी नहीं हो और गर्मी नहीं करें। जैसे–लोकी, तोरई, ककड़ी, पत्तागोभी, टमाटर, कद्दू, पेठा, परवल।

(2) **कसरत**–जो खाते हैं उसको पचा नहीं पाते हैं इसलिए कसरत जरूर करें। डायबिटीज, शुगर, मधुमेह में ऊर्जा शक्ति को ठीक करने के लिए पाचन की क्रिया को अच्छी करना बहुत जरूरी है, इसके लिए उचित कसरतें करें। इससे ऊर्जा का सदुपयोग शरीर में होने लगेगा और यह ऊर्जा ग्लूकोज लीवर पाचक रसों एवं पेन्क्रियाज के सहयोग से ग्लाईकोजन में बदलकर शरीर में नव निर्माण कर सकेगी।

(i) **जोगिंग** –10 मिनट तेज गति या मध्यम तेजी से जोगिंग करें या दौड़ लगावें तथा तेज गति से घूमना लाभकारी होता है।

(ii) दण्ड बैठक, सूर्य नमस्कार, तैराकी।

(iii) कोई भी फिजिकल गेम्स बास्केटबाल, फुटबाल, क्रिकेट, कबडडी, खो–खो आदि खेलें।

(iv) **योग**–उत्तानपादासन, पवनमुक्तासन, नौकासन, भुजंगासन, पर्वतासन, सायकिलिंग, चक्रासन, शवासन, अर्द्धमत्स्येन्द्रासन, मण्डूकास, ध नुरासन।

(5) झाडू, पोछा, बर्तन, कपड़े धोना, बागवानी, खेती के काम, शक्ति के काम करें, मेहनत करें।

(3) **सम्यक् विश्राम**–8 से 9 घण्टे की सम्यक् नींद अच्छा भोजन, अच्छी कसरत करने के बाद ही आती है। तनाव, थकान, हताशा, निराशा, कुण्ठा, लाचारी, बीमारी में विश्राम अति आवश्यक है।

काम, बोझ कई तरह के टेंशन से मुक्ति के लिए सम्यक् विश्राम जरूरी है। शरीर के अंगों की रिपेयरिंग मेंटेनेंस निर्माण विश्राम की आवस्था में ही होती है। इसलिए शरीर को विश्राम अवश्य दें। वे तीनों काम अच्छी तरह से किये तो डायबिटीज से मुक्ति अवश्य मिल सकेगी।

डॉ0 छैल बिहारी शर्मा,
मुख्य चिकित्सक, नारायण सेवा संस्थान,
उदयपुर

बिन पानी सब सून

आकाश

कुछ दिनों पहले ही हमने पर्यावरण दिवस मनाया है। कई प्रतिज्ञाएं भी ली हैं। पर ऐसा लगता है कि मानो ये प्रतिज्ञाएं कुछ दिनों के लिए ही होती हैं, तभी तो पानी की लगातार हो रही कमी और लगातार बढ़ रही बर्बादी की दिशा में कोई कुछ काम करता ही नहीं है। सड़क पर चलते हुए, बस में जाते हुए या ट्रेन में सफर करते हुए जगह-जगह पानी की खुली टंकियां आसानी से नजर आ जाती हैं। उस टंकी या पाइप लाइन से बहते पानी को दिनभर में हजारों लोग देखते हैं, पर किसी को इस बात की चिंता नहीं होती है कि इस कीमती पानी को बर्बाद होने से रोका जाए।

हमारी लापरवाही से पानी न सिर्फ बरबाद होता है, बल्कि दूषित भी होता है। हालत यह है कि हजारों लीटर पानी हमारी लापरवाही के कारण इस स्थिति में पहुंच जाता है कि उसका फिर किसी भी तरह से उपयोग नहीं किया जा सकता है। ऐसा करने से आने वाली पीढ़ी की प्यास कैसे बुझेगी? भूजल स्तर लगातार घटता जा रहा है। हम प्राकृतिक साधनों का अपनी सुख-सुविधाओं के लिए लगातार दोहन कर रहे हैं। क्यों न हम पानी की बर्बादी रोकने की कोशिश करें। इसके लिए यह सोचना बन्द करना होगा कि यह काम कोई और कर लेगा। हम सबको मिलकर पानी बचाने की मुहिम शुरु करनी होगी। -फकीरगंज, कांठ

ऐसे होते हैं आर्य

दानशीलता व उदारता की प्रतिमूर्ति हैं

श्री इन्द्रदेव जी गुलाटी

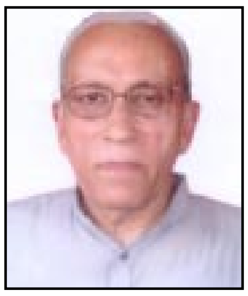

बुलन्दशहर निवासी, वीर सावरकर पुस्तकालय एवं वाचनालय के संचालक इन्द्रदेव गुलाटी अनेक सामाजिक संस्थाओं को अपना सहयोग प्रदान करते रहते हैं। इसी क्रम में श्री गुलाटी जी ने आर्यावर्त केसरी द्वारा स्थापित की गयी पाकिस्तान विस्थापित निधि में पाकिस्तान से विस्थापित लक्ष्मण आर्य के परिवार की सहायतार्थ रु० ११००/, भयंकर बाढ़ से पीड़ित आर्ष गुरुकुल, होशंगाबाद (म०प्र०) के लिए रु० १०००/-, आर्यसमाज गांधीधाम को रु० १०००/- व श्रीमद्दयानन्द कन्या गुरुकुल, चोटीपुरा को उपहार स्वरूप हिन्दू सभावार्ता का आजीवन सदस्य बनाकर अपनी दानशीलता का परिचय दिया है। इसके साथ ही श्री गुलाटी जी द्वारा अन्य संस्थाओं को भी विभिन्न मद में दिया गया दान इस प्रकार है-

१. भवन निर्माण हेतु- चमेली देवी कन्या विद्या मन्दिर में प्रधानाचार्या का कार्यालय बनवाया	७०००० /- रु०
विश्व हिन्दू परिषद् के कार्यालय में एक कमरा बनवाया	51000/- रु०
भूतेश्वर श्मशान घाट में बड़े हाल के लिए सहयोग राशि	50000/- रु०
२. तारा संस्थान उदयपुर को आंखों के आपरेशन करने के लिए	१२०००/- रु०
३. आर्य महासम्मेलन, नई दिल्ली	११०००/- रु०
4. महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक, अजमेर	११०००/- रु०
5. सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर	१००००/- रु०
6. आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली	१०००/- रु०
७. दयानन्द संस्थान, दिल्ली	२२००/- रु०
8. आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़	२२००/- रु०
9. दयानन्द कल्याण आश्रम, कुशआपाल	१०००/- रु०
१०. आर्य अनाथालय, फिरोजपुर	१०००/- रु०
११. भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा	5000/- रु०

निम्न १३ व्यक्तियों को १२००/- प्रत्येक से हिन्दू सभावार्ता का सदस्य बनाया-

दयानन्द स्मारक न्यास, अजमेर; सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर; वैदिक अध्यात्म चेतना मिशन, सीकर; आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़; आर्य अनाथालय, फिरोजपुर; आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली; आर्य बन्धु खूबीराम समिति, दिल्ली; वैदिक धर्म प्रचार प्रसार न्यास, जयपुर; आर्य समाज, गांधीधाम; आर्य समाज, कर्णवास; विरजानन्द ट्रस्ट वेद मन्दिर, मथुरा; आर्यसमाज, भोजपुर खेड़ी, बिजनौर; आर्यसमाज, गाजीपुर।

१२. स्कूल-कालेज-पुस्तकालय कुल संख्या, आजीवन हिन्दू सभावार्ता	=२२ सदस्य
१३. वार्षिक सदस्य हिन्दू सभा वार्ता- रु० १००/- प्रत्येक	=७२ सदस्य
१४. वार्षिक सदस्य उगता भारत- रु० १००/- प्रत्येक	=१३ सदस्य
१५. आजीवन सदस्य शुद्धि समाचार रु० ३००/- प्रत्येक	=१२४ सदस्य

देवयज्ञ है सर्वांग पूजा : वैदिक

आकाश

देवयज्ञ एक सर्वांगपूजा है, जिसमें बाह्य और आन्तरिक जगत दोनों के पंचमहाभूतों सहित सभी देवताओं की पूजा हो जाती है। वेदमंत्रों से ही आहुति शब्दों के साथ संबन्धित वेद के देवता पर जाती है।

सामवेद का मंत्र कहता है कि अग्निदूतं वाणीमहे होतार विश्ववेदाम्। यज्ञ एकान्त रमणीय विघ्नों से रहित शान्त प्रदेशों में, पर्वतों, नदियों के निकट करने का विधान सामवेद के मंत्र उपहरें गिरीणां संगमे च नदीनाम धिया विप्रो उजायत कहता है। अग्नि के तीन भाई हैं- सूर्य, द्यौ, अन्तरिक्ष, जिन्हें वह भोजन देता है।

अन्य प्रकार की पूजा सर्वांग पूजा नहीं होती। जैसे पीपल को पानी देने से पीपल को लाभ होगा, अन्य महाभूतों को नहीं। मूर्तिपूजकों को इस विषय को समझना होगा। द्रव्य का यज्ञ में सदुपयोग करने वाले पवित्र और महान होते हैं।

वैसे ब्र० कृष्णदत्त जी महाराज के प्रवचनों में बहुत से अनुबुझे प्रश्नों, जैसे- सीता, हनुमान, कुश, मकरध्वज, इत्यादि के जन्म, रावण की नाभि में अमृत, द्रोपदी चीर हरण जैसी घटनाओं के सही वैज्ञानिक उत्तर हमें मिलते हैं।

आधुनिक परिवेश में क्या यज्ञार्थ कर्मकाण्ड तथा सत्संग पद्धति युवाओं को आर्य समाज के प्रति अभिरूचि में बाधक है?

आर्य सम्मेलनों में तथा यज्ञार्थ कर्मकाण्डों में युवाओं की अति अल्प भागीदारी से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि कहीं न कहीं कोई न कोई दोष अवश्य है। आर्य समाज की स्थापना को 100 वर्ष से अधिक हो चुके हैं। आर्य समाज एक वैचारिक क्रान्ति है। अधिकतर क्रान्तियां साठ सत्तर वर्षों में परिपक्व हो गयी हैं। लेकिन आर्य समाज में ऐसा नहीं हुआ।

मेरे विचार से इसका सबसे बड़ा कारण है कि महर्षि के बह्यवाक्य की पूर्ण रूप से व्याख्या न होना। महर्षि का बह्यवाक्य है कि ''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।'' जब वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है तो आधुनिक विज्ञान भी वेदों में समाहित है। आधुनिक विज्ञान वेदों में कहां पर, किस प्रकार से अभिव्यक्त है, ये तथ्य युवाओं को बताना अत्यन्त आवश्यक है। आधुनिक विज्ञान में ऐसे अनेक स्थल हैं जिनका स्पष्टीकरण आधुनिक विज्ञान नहीं कर पाया है। इन सबका स्पष्टीकरण वेद में है। हमारे अधिकतर प्रतिभाशाली विद्यार्थी विज्ञान ही पढ़ते हैं। हमारे ऐसे विद्यार्थी जिनकी रूचि Research में है वे अवश्य ही वैदिक विज्ञान की ओर आकर्षित होंगे। वे वेद भी पढ़ेंगे तथा व्याकरण भी पढ़ेंगे। आर्य समाज की वैचारिक क्रान्ति उस समय पूर्ण मानी जायेगी जब Engineerning व Medical Scince के विद्यार्थी वेद पढ़ने लगेंगे। वेदों में तीन प्रकार की विद्याए हैं–

1. आध्यात्मिक विद्या। (Spritual Knowledge)
2. आधिदैविक विद्याा। (Scientific Knowledge)
3. आधिभौतिक विद्या। (Social Knowledge)

1. वेदों की आध्यात्मिक विद्या उपनिषदों में है।
- वेदों की आधिदैविक विद्या बह्मरण ग्रन्थों में है।
- वेदों की आधिभौतिक विद्या स्मृति ग्रन्थों में है।
- जब अग्नि शब्द का अर्थ परमात्मा होता है तो आध्यात्मिक अर्थ प्रकट होता है।

2. जब अग्नि का अर्थ राजा होता है तो आधिभौतिक अर्थात् सामाजिक अर्थ निकलता है।
3. जब अग्नि का अर्थ अग्नि होता है तो आधिवैदिक अर्थात् वैज्ञानिक अर्थ प्रकट होता है।

वेद में वैज्ञानिक तथ्यों को आलंकारिक काव्यात्मक भाषा में अभिव्यक्त किया गया है। अनेक वैज्ञानिक घटनाओं को आख्यापिकाओं द्वारा प्रकट किया गया है।

वैदिक विज्ञान में अनेक Technical Terms हैं जिन्हें Identify करना अत्यन्त आवश्यक है।

वैदिक विज्ञान को समझने के लिए निम्न पुस्तकों का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक उपयोगी है।

1. महर्षि यास्क द्वारा रचित निअवक्त शास्त्र, विशेष रूप से दैव काण्ड।
2. महर्षि कणाद द्वारा रचित वैशेषिक दर्शन तथा इस पर प्रशस्तपाद भाष्य।
3. महर्षि दयानन्द कृत यजुर्वेद भाष्य संस्कृत भाग सहित।
4. शतपथ ब्राह्मण
5. महर्षि दयानन्द कृत = ऋग्वेद भाष्य संस्कृत भाग सहित।
6. ऐतरेय ब्राह्मशा।
7. वृहद् विमान शास्त्र।
8. अंशु बौधिनी।
9. सूर्य सिद्धान्त।
10. अगस्त्य संहिता।
11. सारंगण क्षणधार आदि।

यज्ञ तीन प्रकार के होते हैं।

i. आध्यात्मिक यज्ञ – परमात्मा तथा आत्मा के स्वरूप को जानकर योग विद्या के द्वारा परमसुख मोक्ष को प्राप्त करना।

ii. आधिदैविक यज्ञ – प्राकृतिक शाक्तियों के स्वरूप को जानकर इनका प्रयोग सुख साधनों के बनाने में करना।

iii. आधिभौतिक यज्ञ

1. भूलोक की दिव्य शक्ति अग्नि है।
2. अन्तरिक्ष लोक की दिव्य शक्ति इन्द्र अर्थात् विद्युत है।
3. द्यौलोक की दिव्य शिक्त सूर्य है। अन्य दिव्य शक्तियां इनके ही आवान्तर रूप हैं। वैदिक विज्ञान की भाषा में इन दिव्य शक्तियों को देवता कहते हैं।

आधिदैविक यज्ञ को शिल्प विद्या कहते हैं। अग्नि होता एक आधिदैविक यज्ञ है। यह दो प्रकार का होता है– 1. नित्य अग्निहोत्र 2. नैमित्तिक अग्निहोत्र

नित्य अग्निहोत्र पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए किया जाता है। देवताओं से सम्बन्धित ऋचाओं को बोलकर घृत आदि की आहुति दी जाती है। अर्थपूर्वक मन्त्र बोलने से अन्तः कारण भी पवित्र होता है। दूसरा नैमित्तिक अग्नि होत्र होता है। जिसमें अग्नि का उपयोग किसी सुख–साधन की प्राप्ति के लिये किया जाता है। इसे ही शिल्प विद्या कहते हैं। आजकल प्रचलित ऋग्वेद परायण यज्ञ, यजुर्वेद परायणा यज्ञ, सामवेद परायण यज्ञ, तथा अथर्ववेद परायण यज्ञ भी बड़े पैमाने पर किये। नित्य अग्नि होत्र ही है। इनका उद्देश्य केवल ब्राहय तथा आन्तरिक वातावरण को शुद्ध करना है। इनमें कोई शिल्प विशेष नहीं होता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में इन यज्ञों का नाम मात्र भी उल्लेख नहीं है। ब्राह्मण ग्रन्थों में अनेक प्रकार के यज्ञों का वर्णन है।

1. शिल्प (Technology) को विकसित करने के लिए अग्नि विद्या का उपयोग किया जाता है। उसे अग्नि ही कहते हैं।
2. विद्युत उपयोग करके शिल्प विकसित करने की सौत्रायगणी यज्ञ कहते हैं।
3. ईधन विज्ञान से विभिन्न प्रकार के ईधन विकसित करने को सोम यज्ञ कहते हैं।
4. वैज्ञानिक शक्ति प्राप्त करने के लिए अश्वमेघ यज्ञ किया जाता है।
5. सूर्य किरणों में शक्ति प्राप्त कराने को ग्रामेघ यज्ञ करते हैं।
6. अग्नि, विद्युत तथा सूर्य की शक्ति प्राप्त करने के लिए पशु यज्ञ किया जाता है।
7. देश की राजनैतिक शक्ति को व्यवस्थित करने के लिए राजसूय यज्ञ किया जाता है। यह एक आधिभौतिक यज्ञ होता है। इति।

–कृपाल सिंह वर्मा, 253, शिवलोक, कंकरखेड़ा, मेरठ

मानव की कार्य कुशलता ही सफलता की कुँजी

आचार्य भगवानदेव वेदालंकार

इस संसार में कर्म–कुशल बनने की महती आवश्यकता है। कर्मशील व्यक्ति ही प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। परमपिता परमात्मा ने वेद–ज्ञान के माध्यम से हमें कर्मशील बनने की अनेक प्रकार से प्रेरणा दी है। उदाहरण –

''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।''
–यजुर्वेद अध्याय 40–मंत्र–2

अर्थात् (इह कर्माणि कुर्वन्त एव) इस संसार में मनुष्य को कर्म करते हुए ही **(शांत समाः जिजीविरोत्)** सैकड़ों वर्षों तक जीने की इच्छा करनी चाहिए। आलसी बनकर, प्रमाद युक्त बनकर, निकम्मा बनकर जीवन नहीं जीना है! कर्मशील बनने के अलावा संसार में जीवन जीने का अन्य कोई दूसरा उपाय नहीं है। **(न कर्म–लिप्यते नरे)** 'कर्मशील व्यक्ति' सांसारिक कर्म बन्धनों में नहीं फँसता है। वह एक दिन अपने इच्छित फलों को प्राप्त कर लेता है। कर्म–कुशलता ही सफलता की सबसे अच्छी कुँजी है।

शुभ कर्म करने से कल्याण होता है – मानव जीवन बड़े ही पुण्य कर्म करने से प्राप्त होता है जैसे **'यज्ञ–कर्म'** करना चाहिए, इसमें ब्रह्मयज्ञ यानि **ईश्वर–भक्ति**, योगादि क्रियाओं से परमात्मा का ध्यान, मनन, चिन्तन करने से कल्याण होता है। इसी प्रकार **देव–यज्ञ, पितृ–यज्ञ, अतिथि–यज्ञ, परोकार कर्म, दान–कर्म, स्वाध्याय–कर्म व सत्संग–कर्म** करते रहने चाहिए।

''बिन सत्संग 'विवेक' न होई/प्रभु कृपा बिन सुलभ न कोई।।

इस प्रकार के श्रेष्ठ कर्म करने से ही मानव का परम कल्याण होता है। इसलिए मनुष्य को कर्म–कुशल होना चाहिए। संसार में व्यक्ति को अपने उत्तम व्यवहार से, शुभ कार्यो से अपनी अच्छी पहचान बनानी चाहिए।

शुभ कर्मों से स्वर्ग की प्राप्ति– संसार में शुभ कर्मों से ही व्यक्ति को विशेष सुख की तथा शन्ति की अनुभूति होती है। अंहिसा का पालन करना, सत्याचरण, सदाचार का पालन, चोरी न करना, बिना पूछे किसी की वस्तु प्रयोग न करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना, मन, वचन, शरीर को पवित्र रखना, सन्तोष से काम लेना, ईश्वर के प्रति समर्पित भाव से कार्य करना, मन और इन्द्रियों पर काबू रखना, विद्या–पढ़ना आदि जैसे शुभ कर्म मनुष्य को स्वर्ग की ओर ले जाते हैं। इसके विपरीत संसार में कुछ कर्म ऐसे हैं जो अशुभ कर्म हैं। निषिध्य कर्म हैं। जैसे–हिंसा करना, निपराध प्राणियों को मारकर खाना, गौ–हत्या करना, पशु–पक्षियों का मांस–भक्षण करना, अण्डे खाना, असत्याचरण करना, छल–कपट का सहारा लेना, चोरी करना इत्यादि अशुभ कर्मों के सेवन से व्यक्ति नरक गामी बनता है। दुःखी और अशान्त रहता है। ऐसे निषिध्य कर्मों से मनुष्य को बचना चाहिए।

जीवन की कर्म करने की क्या स्थिति है ?

हमारे ऋषियों, वेद–शास्त्रों का यह कहना है कि जीवन कर्म करने में स्वतन्त्र है। जीव यदि स्वतन्त्र न होता, तो पुण्य भी न करता और सुख भी न मिलता। महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में कर्म सम्बन्धी प्रश्नों के द्वारा समाधान प्रस्तुत किया है।

प्रश्न– जीवन स्वतन्त्र है व परतन्त्र ?

उत्तर– जीवन अपने कर्तव्य कर्मो में स्वतन्त्र है और ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार फल भोगने में परतन्त्र है। **''स्वतन्त्रः कर्ता।।** ऐसा पाणिनीय व्याकरण के सूत्र का प्रमाण भी है। आगे फिर प्रश्न किया गया है।

अपने सामार्थ्य अनुकूल कर्म करने में जीव स्वतन्त्र है, परन्तु जब वह पाप कर चुकता है तब ईश्वर की व्यवस्था में पराधीन होकर पाप के फल भोगता है। इसलिये कर्म करने में जीव स्वतन्त्र और पाप के दुःख रूप फल भोगने में परतन्त्र होता है। इसी प्रकार शरीरादि की उत्पत्ति करने वाला परमेश्वर उसके कर्मो का भोक्ता नहीं होता, किन्तु जीव को भुगाने वाला होता है। जो परमेश्वर कर्म कराता होता तो कोई जीव पाप नहीं करता क्योंकि परमेश्वर पवित्र और धार्मिक होने से किसी जीव को पाप करने की प्रेरणा नहीं करता। इसलिए जीव अपने काम करने में स्वतन्त्र है।'' (सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास)

गीता में भी कर्म–कुशल करने की प्रेरणा दी गयी है –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन/मा कर्म–फल हेतु र्भूमा ते सङगोऽस्त्व कर्मणि।। अ0 2/47

अर्थात् मनुष्य का अधिकार कर्म करने में ही होना चाहिए, हमने जो कर्म किया है, उसका फल तो हमें मिलना ही है, फिर फल की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। ऐसा भी न होना चाहिए कि मनुष्य की कर्म में प्रीति ही न रहे। निकम्मा, निष्क्रियपन ठीक नहीं। गीता में कर्ता को, कर्म कुशलता को सबसे अच्छा योग बतलाया गया है।

''योगः कर्मसु कौशलम्'' –गीता अ02–श्लोक 50। व्यक्ति को योग करने के लिए भी कर्मशील बनना पड़ेगा तथी सफलता मिलेगी। सन्त तुलसी दास जी ने भी कर्म की प्रधानता को प्रमुख माना है।

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा/जो जस करे तो तस फल चाखा।।

नीति शास्त्रों में कर्मशील उद्योगी एवं परिश्रमी मानव की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की गई है

उद्योगिनं पुरूष सिंहमपैति लक्ष्मी/देवेन देयमिति का पुरूषा वदन्ति/दैवं निहत्य कुरू पौरूषमात्मशक्तया पन्ते कृते यदि न सिद्धयति कोडत्र दोषः।। पञ्चतन्त्र 2–12

अर्थात् इस संसार में सिंह के समान बहादुर उद्योगी कर्मशील व्यक्ति को ही लक्ष्मी रूप धन–सम्पत्ति तथा ऐश्वर्य प्राप्त होता है। भाग्य के भरोसे बैठकर, कामना पूरी हो जाय, बड़ा कठिन है। कायर पुरूष भाग्य के भरोसे बैठे रहते हैं, लेकिन बहादुर व्यक्ति भाग्य को छोड़कर अपनी सामर्थ्यानुसार पुरूषार्थ रूपी कर्म करते हैं। अपने दोषों को सुधारते हैं। अयोध्या सिंह उपाध्याय की ये पक्तियां भी कर्म निष्ठा की प्रेरणा देती हैं। उपरोक्त सन्दर्भो से यह सिद्ध होता है कि मनुष्य को यथा सामर्थ्य कर्मशील होना चाहिए। कर्म कुशलता ही सारी सफलताओं की कुँजी है।

(वैदिक प्रवक्ता)
म0नं0–44, द्वितीय तल, बी0–ब्लॉक, फेस–2,नया बुद्ध बाजार, विकासनगर, नई दिल्ली,–59, मो0नं09250906201

जल ही जीवन है, इसे व्यर्थ न बहाएँ।

ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के शिष्यों ने शिव मन्दिर में कराया चतुर्वेद पारायण यज्ञ

सुमन कुमार 'वैदिक'
दौलतपुर (गुड़गांव)।

5 से १२ जनवरी तक चतुर्वेद **पारायण यज्ञ का आयोजन ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के शिष्य वैद्य विक्रमदेव की प्रेरणा से बाबा सीताराम महाराज शिव मन्दिर, ग्राम धर्मपुर, पो०– दौलतपुर, सैक्टर १०८–१०७ जिला, गुड़गांव में समस्त ग्रामवासियों के सहयोग से सम्पन्न हुआ। यज्ञ जटाधारी कोपिनधारी ब्रह्मचारी सीताराम बाबा द्वारा अपने शिष्यों के सहयोग से कराया गया, जिनका इस क्षेत्र के पौराणिक जनता में प्रभाव है तथा आर्यसमाज से दूर–दूर तक संबन्ध नहीं है।**

इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा वैद्य विक्रमदेव शास्त्री ने कहा कि जब पृथ्वी पर रहने वाले प्राणी सुगन्धि नहीं करते, तो दुर्गन्थ फैल जाती है, जो अन्तरिक्ष को भी दुर्गन्धित कर देती है, जिससे कहीं अतिवृष्टि कहीं अनावृष्टि (अकाल) होने लगती है। इस पृथ्वी की रक्षा के लिए चारों वेदों के मंत्रों तथा घृत से किये जाने का विधान हमारे ऋषियों ने किया, जिससे पृथ्वी की रक्षा हो सके।

यज्ञ पांच विशाल वेदियों पर शिव मन्दिर प्रांगण में संपन्न हुआ, जिसमें अलग–अलग वेदियों पर वेदपाठ ब्रह्ममुनि जी किंकर के नेतृत्व में आचार्य विजयपाल, जयवीर शास्त्री, अमित सिंह, अमित त्यागी, जयकृष्णा, सूरज तरुण, ऋषिराज, विकास, सौरभ, पुनीत, आकाश तथा अभिषेक आर्य ने किया।

भोजन तथा आवास की व्यवस्था ग्राम समाज की ओर से की गयी, तथा ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी के साहित्य को भी ग्रामवासियों को दिया गया। सुमन कुमार वैदिक ने अपने व्याख्यान में कहा कि स्वामी दयानन्द का यही कार्य यदि सब आर्य करने लगें, तो वेद का डंका आलम में बजने लगेगा। आज हम आर्यसमाजों में सिमट कर रहे गये हैं। ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी ने जो चतुर्वेद पारायण यज्ञ की परम्परा प्रारम्भ की, उसे उनके शिष्य पौराणिक जगत, मन्दिरों में लेजाकर वहां प्रकाश फैला रहे हैं।

– सूचना –

'विचार' केन्द्रीय कार्यालय का स्थानांतरण एवं उसके नए पते की जानकारी

'विचार' का केन्द्रीय कार्यालय अंधेरी (मुम्बई) से सूरत (गुजरात) में स्थानांतरित हुआ है। 'विचार' से पत्र–व्यवहार व अन्य जानकारी प्राप्त करने हेतु कृपया निम्नलिखित पते पर संपर्क करें-
विचार टेलीविजन नेटवर्क लिमिटेड
प्रथम तल, बिंदल हाउस, कुंभारीया,
सूरत-कड़ोदरा मार्ग, सूरत- ३९४२१० (गुजरात) भारत
दूरभाष : ९१ ०२६१ २६४४०६/ ४०७, चलभाष : ९१ ७५७४८ २४४०६
वेबसाइट : www.vichar.tv, ईमेल : info@vichar.tv
धर्मेश आर्य, मुम्बई

वसंतोत्सव पर हुए कार्यक्रम

सुरेश कुमार सेठी
सहारनपुर।

वसंत उत्सव, वीर हकीकतराय बलिदान दिवस व आर्यसमाज खलासी लाइन के ६१वें स्थापना दिवस पर आचार्य अनुज शास्त्री के पौरोहित्य में यज्ञ हुआ। मुख्य यजमान नरेन्द्र गर्ग सपत्नी रहे। प्रार्थना के उपरांत ध्वजारोहण सोमदत्त शर्मा, ओड़म् गायन, हरिसिंह आर्य द्वारा किया गया।

आचार्य अनुज शास्त्री ने कहा कि 'होते हैं कुछ लोग जो इतिहास सुनाया करते हैं, कुछ लोग अपने पावन कर्मो से इतिहास बनाया करते हैं।' वातावरण को भक्तिमय करते हुए वैदिक भजनोपदेशक हरिसिंह आर्य ने कहा कि 'तेरी गति का भेद न पाया/ अजीब तेरी माया अजीत तेरी माया/ जड़े तूने नभ में चांद सितारे, तेरी रोशनी से गगन जगमगाया/ किसी को हंसाया किसी को रुलाया/ अजब तेरी माया अजब तेरी माया।।'

कार्यक्रम की अध्यक्षता हरिसिंह आर्य ने की। सोमदत्त शर्मा, बारूराम शर्मा, सेरेन्द्र चौहान, रघुवीर और सुमन आर्य, रविकान्त राणा, सुरेश सेठी, शांति देवी, शोभा आर्य, सुरेश आर्य, सुरेन्द्र कुमार आर्य, सुमन गुप्ता, विजय कुमार गुप्ता, रामकिशोर सैनी, अमरसिंह लेखपाल, अनिता आर्य, रोशनलाल, रविन्द्र आर्य, रमेश राजा, योगराज शर्मा, प्रेमसागर, राजसिंह चौहान, रमा देवी, मीना वर्मा, राजकुमार आर्य, प्रियवर्त्त शास्त्री, विनोद आर्य, मधु शर्मा, मूलचन्द यादव आदि रहे। मंच संचालन बारूराम शर्मा ने किया।

पुस्तक समीक्षा

आचार्य रामनाथ वेदालंकार

श्रुति–मंथन पुस्तक समीक्षा

ग्रन्थ के 700 से अधिक पृष्ठों, भव्य साज–सज्जा व आकर्षक मुख पृष्ठ को देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। मुखपृष्ठ व अन्तिम कवर पृष्ठ पर आचार्य जी के भव्य चित्र हैं। अन्दर के पृष्ठ आचार्य जी पर श्रद्धांजलि एवं उनके संस्मरणों से सम्बन्धित लेख, कवितायें व चित्र आदि के रूप में हैं, जिन्हें अनेक अध्यायों में, प्रकाशकीय, पुरोवाक् व शुभाशंसा से आरम्भ होकर प्रथम 45 पृष्ठों में प्रणतिः के अन्तर्गत आचार्य जी पर संस्कृत व हिन्दी की कवितायें हैं। इसके बाद आचार्य जी की जीवन यात्रा पर डॉ. विनोदचन्द्र विद्यालंकार जी द्वारा लिखित सामग्री है।

इसके अगले अध्याय 'अतीत के झरोखे' में आचार्यजी का सान्निध्य प्राप्त विद्वानों एवं सुधीजनों की तूलिका के अन्तर्गत 37 लेख व श्रद्धांजलियां हैं। 'स्मृति–सौरभ' अध्याय आचार्य जी के परिजनों द्वारा प्रस्तुत 34 लेखों का संकलन है। 'स्मृमियों के वातायन से' अध्याय के अन्तर्गत 29 लेख शिष्य परम्परा द्वारा समर्पित श्रद्धा–सुमन नाम से हैं। इसके बाद आचार्यजी का पत्राचार है जिसमें प्रथम वह पत्र है जो कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द जी का बालक रामनाथ को आशीर्वाद पत्र है।

आगामी अध्याय 'पर्यालोचन' में 23 विद्वान शिष्यों द्वारा आचार्य जी के कार्यों का मूल्यांकन व महत्ता सूचक लेख हैं। 'श्रुति–सौरभ' अध्याय में आचार्यप्रवर के 14 लेखों का संकलन है, जिसका पहला लेख 'वेदों में सौर ऊर्जा का वैज्ञानिक प्रयोग' एवं दूसरा 'वेदों का चमत्कारिक मनोबल है।' अगले 'विचार–मंथन' अध्याय में 9 लेखों का संकलन है।

अन्तिम अध्याय 'काव्यामृतम्' नाम से है जिसमें आचार्य जी कृत 8 काव्यों का पृष्ठ 715 से 723 तक संकलन है। एक परिशिष्ट 'वेदमूर्ति आचार्य रामनाथ वेदालंकार जन्मशती–वर्ष शुभारम्भ महोत्सव का आरम्भ' नाम से आचार्य जी के पौत्र श्री स्वस्ति अग्रवाल द्वारा लिखित रिर्पोट है। ग्रन्थ के अन्त में 44 पृष्ठ आचार्य जी जुड़े पारिवारिक जनों एवं मुख्य–मुख्य अवसरों के रंगीन चित्र आदि दिये गये हैं।

इसके अतिरिक्त पुस्तक में महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं स्वामी श्रद्धानन्द जी के ग्रन्थ के आरम्भ में पूरे पृष्ठ के दो भव्य एवं आकर्षक चित्र हैं। पुस्तक का मूल्य 600 रूपये अंकित है, जो 'श्री घूड़मल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डोन सिटी' से प्रकाशित एवं प्राप्त है। हमारा विचार है कि आचार्य जी से किसी भी रूप में जुड़े व्यक्ति के पास यह संग्रहणीय ग्रन्थ अवश्य होना चाहिये।

काव्य जगत

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी को 'भारत रत्न' की घोषणा पर विशेष

कान्ति वल्लभ जोशी

देश अटल सीमाएं अटल,
अटल सुहाग हो नारी का ।
जनम दिवस पच्चीस दिसम्बर
पावन सन्देश अटल बिहारी का।।
देश के कायाकल्प का बीड़ा
उठाया था जिसने।
आजादी के बाद लम्बी,
टक टकी लगाई थी उसने।।
लड़े उन्होंने चुनाव सभी,
पर हार न खाई थी कभी।
उम्र के आगे विवश हुए,
कसम न निभाई थी अभी।।
भारत की धरती पर यों ही,
आगमन हो कृष्ण और मीरा का।
नहीं भूल सकते हम देश में
योगदान अटल बिहारी का ।।
शतायु रहें वे धरती पर
जन जन ने यह ठानी है ।
कहैं सदगुरू उनके पगचिन्हों पर
चलने की कसम हमें खानी है।।

चन्द्र कालोनी,
स्टेशन रोड, टनकपुर

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री जी के 'निर्मल गंगा अभियान' पर विशेष

गंगा से अमृत फिर बरसे

डॉ० रामबहादुर 'व्यथित'

मां के वसन हुए हैं मैले, आर्य! उठो सन्धान करो।
हमको माता बुला रही है, हे भक्तों! श्रम-दान करो।।
गिरि के भाल विराजैं गंगा,
सागर चरण पखारें गंगा।
कल्मष से भर डाला हमने,
मैल-वाहिनी कल-कल गंगा।।
हिचकी भर रोये भागीरथ, पुत्र! उठो, अभियान रचो।
निर्मल गंगा बुला रही है, हे भक्तों! श्रम-दान करो।।
सगर-वंश को मुक्ति दिलाई,
शुष्क धरा सारी सरसाई।
ऋषिकेश, हरिद्वार औ कनखल,
धर्म-ध्वजा फर-फर फहराई।।
तीर्थों का कल-कल निनाद यह, अमृत-मय हरि-धाम रचो।
निर्मल गंगा बुला रही है, हे भक्तों! श्रम-दान करो।।
दशाश्वमेध या कुम्भ-नजारा,
गंगा की लहरें शिव-धारा।
हो प्रयाग या 'गंगा सागर',
अमृत-कलश तुम्हीं पर वारा।।
धारा का अन्तस् ना टूटे, देव! वही संग्राम रचो।
निर्मल गंगा बुला रही है, हे भक्तों! श्रम-दान करो।।
टूट ग्लेशियर चटख रहे हैं,
हिमवत् के दृग बिलख रहे हैं।
शुद्ध करो मां के पग मैले,
प्राण 'जाह्नवी' अटक रहे हैं।।
दलदल न बन जाए हिमालय, अर्चन पुण्य विधान करो।
निर्मल गंगा बुला रही है, हे भक्तों! श्रम-दान करो।।
'नमामि गंगे', 'नमामि गंगे',
अधरों पर बस यही गान हो।
देश जगे - गंगा हो निर्मल,
देव भगीरथ! यही आन हो।।
गंगा से अमृत फिर बरसे- ऐसा दिव्य विधान करो।
निर्मल गंगा बुला रही है, हे भक्तों! श्रम-दान करो।।

-विजय वाटिका, कोठी नं०-३, सिविल लाइन, बदायूं
मोबा. : 09837618715

मोदी ने दी जापानी पीएम को विवेकानन्द की जीवनी (एक प्रतिक्रिया)

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर (८९५८७७८४४३)

(१) पराधीन भारत को स्वतंत्र कराने का आह्वान सबसे पहले महर्षि दयानन्द ने किया था।

(२) महर्षि दयानन्द की आर्य समाज, विवेकानन्द के रामकृष्ण मिशन से कई गुना बड़ी है।

(३) नरेन्द्र मोदी १४ वर्ष गुजरात के मुख्यमंत्री रहे, किंतु उन्होंने गुजरात में जन्मे विश्वविख्यात महर्षि दयानन्द जयन्ती का राज्य-स्तर पर सरकारी अवकाश भी प्रारम्भ नहीं किया।

(4) हरियाणा विधानसभा के चुनाव प्रचार में मोदी ने महर्षि दयानन्द का नाम अवश्य लिया, क्योंकि हरियाणा में आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के अनुयायी अच्छी संख्या में हैं।

(5) मुझे तब हार्दिक प्रसन्नता होती, यदि मोदी ने जापानी प्रधान मंत्री को महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश भेंट में दिया होता।

(6) मोदी तथा दयानन्द, दोनों गुजरात के हैं, अत: मोदी जी से यह आशा की जाती है कि भविष्य में विदेशी नेताओं को सत्यार्थ प्रकाश भेंट दिया करें।

(७) संघ परिवार में आर्य समाजी भी हैं, लेकिन संघ के सारे कार्य सनातन धर्म (मूर्तिपूजा) की पद्धति से ही किये जाते हैं, जबकि वैदिक धर्मियों की भावनाओं का भी ध्यान रखना चाहिए।

हम सदा पात्र को दान देने वाले बनें।

ऋषि- आंङि्रसः। देवता- विद्वांसः। छन्द- भुरिगार्षी त्रिष्टुप। स्वर- धैवतः।
ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्त पैतृमत्यमृषिमार्षेयं सुधातुदक्षिणम्।
अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमाविशत।।46।। यजुर्वेद (सप्तम अध्याय)।।

गत मंत्र में गृहस्थ का एक कर्तव्य दान भी बताया गया था। दान पात्र को ही देना चाहिए। उस पात्र के विषय में गृहस्थ प्रार्थना करता है कि प्रभो! आपकी कृपा से मैं विदेयम= प्राप्त करूं। दान देने के लिए ऐसे व्यक्ति को पा सकूं जो (१) ब्राह्मणम् (देवेश्वरविदम- द०) वेदाभ्या सेत्ततो विप्रो ब्रह्मवेत्तीति ब्राह्मण:' वेदाभ्यास से ब्रह्म को जानने वाले ज्ञानी को अर्थात् जो ज्ञान प्राप्त करता है और ईश्वर के साक्षात्कार के लिए यत्नशील होता है। (२) पितृमत्यम्= अतिविशिष्ट पिता वाले को, जिसे माता-पिता से उत्तम सात्विक गुण प्राप्त हुए हैं। (३) पैतृमत्यम्= जिसके पितामहादि भी वैश्य व श्रोत्रिय थे, अर्थात् जितेन्द्रियता व विद्वत्ता जिसके कुल की विशेषता रही है। (4) ऋषिम्= जो तत्वद्रष्टज्ञ है। (5) आर्षेयम्= (ऋषिषु विख्यात:- म०) ऋषियों में जो व्याख्यान-शक्ति के कारण प्रसिद्ध है। 'ऋषि' शब्द में आगम= ज्ञान की प्राप्ति की प्रधानता है। संक्षेप में जिसके 'इम्प्रैशन' व 'एक्स्प्रैशन' दोनों ही उत्तम हैं। (6) सुधातुदक्षिणम्= उत्तम वीर्यादि धातुओं के कारण जो अपने कर्तव्य-कर्मों में बड़ा दक्ष है। (७) उपर्युक्त गुणों से युक्त पात्र को हम प्राप्त करें। पात्र में दिया हुआ दान ही सफल होता है। अस्मद्राता:= हमारे दिये हुए धनों तुम देवत्रा गच्छत= देवों में प्राप्त होओ अर्थात् हमारे धन दिव्य गुणों से युक्त पुरुषों में ही दिये जाएं, जिससे तुम फिर से प्रदातारम्= देने वाले में अविशत= प्रविष्ट होओ। सुपात्र को दिया हुआ दान इस रूप में फलता है कि वह कई गुणा होकर दाता को फिर से प्राप्त हो जाता है।

भावार्थ- हम सदा पात्र को दान देने वाले बनें।

आओ आर्यजन! 'कृण्वन्तोविश्वमार्यम्' को अपने जीवन में अंगीकार करें।

यदि आर्यसमाज स्थापित न होता तो क्या होता?

गतांक का शेष.........

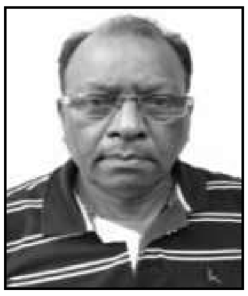

मनमोहन कुमार आर्य

हमें लगता है कि इंग्लैण्ड व भारत के बीच की जो दूरी थी और समुद्री मार्ग में जो कठिनाईयां होती हैं वह भी एक कारण हो सकता है। हमारी सेनाओं में भी आजादी की भावना व विचार घुस चुके थे। सैनिक व सिपाही मंगल पाण्डे का उदाहरण तो सामने है ही। हमें लगता है कि भविष्य में अंग्रेजों को भारतीय सेना के जवानों से भी खतरा नजर आता था। अंहिसात्मक आन्दोलन से भी उन्हें किंचित कष्ट तो होता ही था परन्तु यह सीमित व अधिक विचलित करने वाला नहीं था। अंग्रेज यह भी जानते थे कि गांधीजी जब तक हैं तब तक ही शायद अंहिसा की नीति पर भारत चल रहा है, बाद में क्या होगा इसके प्रति अंग्रेजों में अनिश्चितता थी और वह इससे परेशान थे। अंग्रेजों को सम्भवतः लगा कि वह समय ही उनके लिए उपयुक्त है। बाद में यदि परिस्थितियां खराब होगीं तो उन्हें छोड़ना तो पड़ेगा परन्तु शायद वह उनके लिए अधिक दुःखदायी हो। आजादी के आन्दोलन की दोनों धाराओं, क्रान्ति व शान्ति या अंहिसात्मक, को पोषण आर्य समाज से ही मिला। सबसे पहले स्वतन्त्रता व आजादी का विचार कहां से आया तो इसके लिए महर्षि दयानन्द के साहित्य में अनेक उल्लेख मिलते हैं। सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम् समुल्लास का उल्लेख कि 'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह–रहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर माता–पिता के समान कृपा, न्याय व दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।' यह वाक्य स्वामी दयानन्द ने कांग्रेस की स्थापना से 10 वर्ष पूर्व सन् 1875 में सत्यार्थ प्रकाश में लिखे थे। इसके अतिरिक्त सत्यार्थ प्रकाश में अन्य स्थानों पर, उनके अन्य ग्रन्थों यथा आर्याभिविनय, संस्कृत वाक्य प्रबोध आदि में भी स्वदेशीय राज्य का मार्मिक शब्दों में उल्लेख किया गया है। हमें लगता है कि महर्षि दयानन्द के यही शब्द भावी स्वतन्त्रता आन्दोलन के सूत्र वाक्य या आधार स्तम्भ बने। स्वामी दयानन्द की देश भक्ति का एक पहलू यह भी है कि वह सन् 1824 में अपने जन्म से लेकर सन् 1857 की प्रथम क्रान्ति तक का उल्लेख तो करते हैं, परन्तु सन् 1857 से कुछ पहले व 1860 तक का विवरण अपने अनुयायियों को नहीं बताते। सत्य कुछ भी हो परन्तु यह रहस्यमय है। 1857 में अपनी भूमिका या अन्य कार्यों का विवरण न देना रहस्य को जन्म देता है। न बताने के पीछे का कारण भाग लेना हो सकता है। यदि न लेते तो वह विवरण अवश्य देते जिसका कारण कि उन्होंने उससे पूर्व व पश्चात् का विवरण दिया है। सन् 1857 में महर्षि दयानन्द 33 वर्ष के युवा थे। ऐसे युवक थे जो विगत 15 वर्षों से देशभर में घूम कर साधु– संन्यासी– योगी–विद्वानों को ढूंढ रहा था, उनसे ज्ञान प्राप्त कर रहा था तथा देश की स्थिति को देख रहा था। क्या ऐसा व्यक्ति देशभक्ति के कार्यों से दूर या उदासीन रह सकता है, हमारा अनुमान है कि कभी नहीं? किसी भी क्रान्तिकारी ने अंग्रेजों के शासनकाल में अपने कार्यों का विवरण नहीं दिया। विवरण न देने से कोई क्रान्तिकारी, क्रान्तिकारी नहीं रहता, ऐसा कोई स्वीकार नहीं करेगा। इससे स्वामी दयानन्द के एक देशभक्त व क्रान्तिकारी या उनका सहयोगी या फिर उनके प्रति सहानुभूति रखने वाला तो हो ही सकता है। हमें तो यहां तक भी लगता है कि क्रान्ति के गुप्त सूत्रधारों में से कहीं वह एक न रहे हों, इसी कारण वह पर्दे के पीछे रहे और उन्होंने अपने कृत्यों को गुप्त रखा क्योंकि उसका उल्लेख करने का अर्थ था कि उनके जीवन क्रम की समाप्ति। बताया जाता है कि कांग्रेस के इतिहास लेखक सीताभिपट्टारमैया ने लिखा है कि आजादी के आन्दोलन में भाग लेने वाले आर्य समाज के अनुयायियों की संख्या कुल आन्दोलनकारियों की 80 प्रतिशत थी। यदि आर्य समाज की स्थापना न हुई होती तो इन लोगों के आन्दोलन में भाग न लेने से आन्दोलन का प्रभाव उतना ही कम होता फिर स्वतन्त्रता का लक्ष्य पूरा होता या नहीं, कहा नहीं जा सकता। यह भी उल्लेखनीय है कि अंहिसात्मक आन्दोलन के प्रणेता गोपाल कृष्ण गोखले थे। महात्मा गांधी इन्हीं के शिष्य थे। गोखलेजी महादेव रानाडे के शिष्य थे जो कि स्वयं को महर्षि दयानन्द का शिष्य मानते थे और यह सर्वविदित भी था। उपर्युक्त अनेक कारणों से अंग्रेजों ने भारत को छोड़ने का निर्णय किया। 15 अगस्त, 1947 को अंग्रेज भारत का विभाजन कर, उसके दो खण्ड, एक भारत व दूसरा पाकिस्तान, करके अपने देश इंग्लैण्ड रवाना हुए।

आर्य समाज की स्थापना 10 अप्रैल सन् 1875 को मुम्बई में हुई थी। इससे पूर्व ही स्वामी दयानन्द सरस्वती पूरे देश में घूम–घूम कर वेद प्रचार कर रहे थे। उन्होंने काशी में मूर्ति पूजा के विरूद्ध वहां के सभी पण्डितों से एक साथ शास्त्रार्थ भी किया था। इस शास्त्रार्थ में विजय से उनकी कीर्ति दिग–दिगन्त फैल गई थी। उनका पक्ष था मूर्तिपूजा व अन्य उपासनायें सच्ची ईश्वरोपासनायें नहीं हैं। सच्ची ईश्वरोपासना योग की रीति से ईश्वर के सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वोपकारक, सर्वान्तरयामी, सच्चिदानन्द आदि असंख्य व अनन्त गुणों वाले सगुण व निर्गुण स्वरूप का ध्यान व चिन्तन करके की जाती है। स्वामी दयानन्द ने सारे संसार को ईश्वर की सच्ची उपासना का ज्ञान व विधि प्रदान की। इस कारण वर्तमान व भविष्य में उनका यह योगदान ऐसा अनोखा कार्य है जिसके लिए सारा विश्व उनका सदा–सदा के लिए ऋणी है और यह कार्य ही उन्हें संसार के सभी धार्मिक महापुरूषों में सबसे बड़ा बनाता है। अग्निहोत्र यज्ञ भी उनकी विश्व को अनुपम देन है। अन्य महापुरूष तो इसके बारे में सोच ही न पाये। पितृयज्ञ, प्राणीयज्ञ व अतिथि यज्ञ भी उनकी ऐसी ही देनें हैं। उन्होंने वेदों के आधार पर सिद्ध किया वेदों को पढ़ने का आधार सभी स्त्री व पुरूषों वा सभी वर्णों जिसमें शूद्र व अतिशूद्र भी हैं, को समान रूप से है। यह उनका बहुत बड़ा क्रान्तिकारी विचार था। वेदों के आधार पर ही वह ऊंच–नीच व छुआछूत के भी विरोधी थे। उन्होंने एक बार एक नाई बन्धु द्वारा भोजन के रूप में उन्हें रोटी प्रस्तुत करने पर सहर्ष स्वीकार की और पौराणिक पण्डितों की आपत्तियों का तर्कों के आधार पर खण्डन किया था। उन्होंने विधवाओं को विवाह करने का अधिकार दिया। नारी शिक्षा के वह समर्थक थे। उनके शिष्यों ने देश भर में नारी शिक्षा के क्षेत्र में सर्वाधिक योगदान किया है। इसी प्रकार से डी.ए.वी. कालेज व गुरूकुल खोलकर भी उनके शिष्यों ने देश को ज्ञान व शैक्षिक योग्यता में स्वावलम्बी व समाज को अज्ञान व अन्धविश्वास से मुक्त करने में भी अग्रणीय योगदान किया। धार्मिक सुधारों के क्षेत्र में तो वह पुरोधा थे। यदि वह न आते तो धार्मिक क्षेत्र में जो सुधार हुआ है, वह कदापि न होता। सनातनी पौराणिक जगत ने तो आज भी अज्ञान, अन्धविश्वास तथा कुरीतियों को अपने गले से लगा रखा है। जब भी उनको अवसर मिलता है, वह आर्य समाज की आलोचना से बाज नहीं आते। आर्य समाज व महर्षि दयानन्द के विरूद्ध अनेक आधारहीन ग्रन्थ लिखकर भी उन्होंने अपनी खीज पूरी की है। पहले समाज में बाल विवाह व बेमेल विवाह होते थे। स्वामीजी ने बाल विवाह का विरोध किया और युवावस्था में समान गुण, कर्म व स्वभाव वाले युवती व युवक का विवाह करने की मान्यता व सिद्धान्त दिया। आज यह सिद्धान्त व मान्यता स्वतः पल्लिवित व पुष्पित हो रही है। उन्होनें विवाह संस्कार की भी आदर्श वेदोक्त विधि प्रस्तुत की जिसका अनुकरण हमारे आलोचक भी करते हैं। 16 संस्कारों की मान्यता व सिद्धान्त स्वामीजी ने ही दिया है जो आज पौराणिकों में भी प्रचलित हो चुकी है और वह भूल गये हैं कि स्वामीजी से पहले कितने संस्कार हुआ करते हैं। स्वामी दयानन्द जन्म के आधार पर कृत्रिम जाति–पाति के विरोधी थे। वह इसे स्वीकार नहीं करते थे। वह गुण–कर्म–स्वभाव पर आधारित चार वर्णों को मानते थे। चारों वर्णों व किन्हीं दो वर्णों में असमानता उन्हें स्वीकार नहीं थी। पशु–हिंसा व मांसाहार, मदिरापान, धूम्रपान व अण्डे आदि के सेवन को वह अप्राकृतिक व अनुचित मानते थे। उनके समय में इतना अधिक मांसाहार था भी नहीं जितना कि आज है। वह व्यक्तिगत, सामाजिक व राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी व संस्कृत में व्यवहार के पक्ष में थे। इन दोनों भाषाओं को जानकर वह देश व विदेश की आवश्यकता के अनुसार भाषाओं के सीखने के पक्षधर थे। त्रैतवाद अर्थात् ईश्वर, जीव व प्रकृति के अस्तित्व का सिद्धान्त उनकी विश्व को अनुपम व प्रमुख देन है। ऐसे अनेक कार्य हैं जो महर्षि दयानन्द ने किए जिनके कारण आज हमारा समाज उन्नति कर सका व उत्तरोतर कर रहा है। यदि आर्य समाज न होता तो हम दावे से कहते हैं कि सामाजिक असमानता कम न होती। त्रैतवाद अस्तित्व में न आता। शिक्षा का जितना प्रसार आज है न हुआ होता। हो सकता है कि भारत गुलाम होता या फिर कहीं अधिक दुर्दशा को प्राप्त होता। महर्षि दयानन्द अपने समय में भारत व विश्व के प्रकाण्ड विद्वान थे। विश्व का सारा धार्मिक व सामाजिक जगत उनका ऋणी है। उन्होंने बिना अंग्रेजी पढ़े एक सच्चे ईश्वर की उपासना, यज्ञ–प्रेमी, सुशिक्षित, चरित्रवान, दुर्गुर्णों से रहित, निष्पक्ष एवं न्याय पर आधारित ऐसे विश्व का स्वप्न देखा था जिसमें कोई अज्ञानी न हो, सब विवेकी हों, किसी के साथ अन्याय न हो, किसी का शोषण न हो, कोई अभावग्रस्त न हो, सभी सम्पन्न व समृद्ध हों, सब सत्य मार्ग पर चलें। अपने स्वप्न को क्रियान्वित करने के लिए स्वामी दयानन्द मनसा, वाचा व कर्मणा प्रयत्नशील रहे थे। सम्भवतः सृष्टि की उत्पत्ति के बाद के 1.96 अरब वर्षों में स्वामी दयानन्द द्वारा किया गया पुनरूद्धार का कार्य अपने प्रकार की पहली अभूतपूर्व आध्यात्मिक एवं सामाजिक क्रान्ति थी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना करके देश व विश्व के कल्याण की जो योजनायें दीं व उनके क्रियान्वयन में अपनी भूमिका निभाई है, वह इतिहास में अपूर्व व महवपूर्ण है। आर्यसमाज ने उनकी मृत्यु के बाद जो कार्य किया वह भी प्रशंसनीय एवं युगान्तरकारी है। यदि आर्य समाज न होता तो देश शायद स्वतन्त्र ही न हुआ होता। महर्षि दयानन्द के समय में देश में जो सामाजिक विषमता थी, वह विद्यमान रहती या फिर और बढ़ सकती थी। हिन्दूओं के धर्मान्तरण का विदेशी मतों का कुचक्र जारी रहता और उसे आर्यसमाज से जिस वैचारिक विरोध का सामना करना पड़ा, उसके न होने से आज जनसंख्या के आंकड़े क्या होते, इतना ही कह सकते हैं कि वह वैदिक धर्मियों व सनातन हिन्दू मत के लिए बहुत दुःखद होते। आर्य समाज ने डीएवी व गुरूकुल शिक्षा आन्दोलन से जो क्रान्ति की थी, उसके न होने से आज देश में शिक्षा की जो स्थिति है, वह अत्यधिक पिछड़ी हुई होती। वस्तुतः आर्य समाज न केवल भारत के लिए अपितु विश्व के लिए एक ऐसी जीवन दायिनी सपमि सपदम सिद्ध हुआ है जिसको अपनाकर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है। यह आज भी प्रासंगिक है और जब तक विश्व में आध्यात्मिक, धार्मिक व सामाजिक अन्धविश्वास, अज्ञान, विषमता, अन्याय, शोषण आदि हैं, आर्य समाज प्रासंगिक है। आर्य समाज की सभी मान्यताओं का आधार सत्य व ईश्वरीय ज्ञान वेद है। विश्व में त्रैतवाद का प्रचार हो, सारी दुनिया उसे स्वीकार करे, सभी मत–सम्प्रदाय मिलकर एक हो जायें और सारे संसार में एक ही उपासना पद्धति विकसित व निर्मित हो, जिसे करके लोगों को ईश्वर का साक्षात्कार हो, विवेक उत्पन्न हो और मानव व प्राणीमात्र सुखी हो, मत–सम्प्रदाय के परस्पर किसी प्रकार के झगड़े व हिंसा की सम्भावना ही न हो, तब तक व उसके बाद भी, आर्य समाज प्रासंगिक रहेगा। आज आर्य समाज को अपने कायाकल्प करने की आवश्यकता है। ऐसा होने पर ही हम आगे बढ़कर कुछ कर सकते हैं।

पताः 196
चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः 09412985121

आजादी (राष्ट्रीय पर्व) बनाम महर्षि दयानन्द

''स्वदेशी शासन चाहे कितना ही बुरा क्यों न हो विदेशी शासन से अच्छा ही रहता है''

नरसिंह सोलंकी

परतंत्र भारत में सबसे पहले यह विचार निर्भीकता एवं स्व प्रेरणा से प्रकट करने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती ही थे। जिन्होंने हमें आजादी की प्रेरणा दी। इसी प्रेरणा के फलस्वरूप सन् 1857 से स्वतंत्रता आन्दोलन की शुरूआत हो गयी थी। बाद में देशी रियासतों के शासकों ने भी अंग्रेजों के विरूद्ध युद्ध किया। कई स्वतंत्रता के संग्राम में कूद पड़े यथा सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, बिस्मिल खां, रामप्रसाद, उधम सिंह, राजगुरू, सुखदेव, रोशनलाल आदि ने अपने प्राण त्याग दिये।

राजनैतिक स्वरूप के अहिंसक आंदोलन में महात्मा गांधी के नेतृत्व में पं. जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, राजा राममोहन राय, लाल बहादुर शास्त्री, दादा भाई नौरोजी, विनायक दामोदर दास, मौलाना आजाद, सरोजनी नायडू, डॉ. राधा कृष्णन्, डॉ. जाहिर हुसैन, प्रफुलचन्द्र, रासबिहारी बसु, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर, विनोबा भावे, जयप्रकाश नारायण, एन. संजीव रेड्डी, नाना सहाब, रानी लक्ष्मी बाई, राजा राममोहनराय, चितरंजन दास, विपिन चन्द्रपाल, बहादुर शाह ज़फर, गोपाल कृष्ण गोखले, लोक मान्य बाल गंगाधर तिलक, वीर सावरकर, सुभाष चन्द्र बोस, सी. राज गोपालाचारी, पं. मदन मोहन मालवीय, गोविन्द वल्लभ पंत, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जय प्रकाश नारायण, फखरूद्दीन अली अहमद, एनी बेसेन्ट, मोरारजी देसाई बी.डी. जत्ती आदि ने भाग लिया और जेल यातनाएं सहीं।

महर्षि दयानन्द ने एकेश्वरवाद के साथ ही समाज सुधार का बहुत बड़ा आंदोलन गुरू विरजानन्द की प्रेरणा से हाथ में लिया। समाज में कुरीतियों व अंधविश्वास घर कर गये थे। सर्वत्र समाज में अंधकार छाया हुआ था उसे मिटाने के लिए विधवा स्त्री विवाह चालू करवाया, बालविवाह बंद करने की प्रेरणा दी, गौ संरक्षण एवं छुआ–छूत मिटाने हेतु चारों वर्ण व्यवस्था की मर्यादा बतलाई। जादू, टोने, टोटके मिटाने की प्रेरणा दी व एक ही परमपिता परमेश्वर की न्याय व्यवस्था एवं उपासना की प्राप्ति के लिए अमर ग्रंथ ''सत्यार्थ प्रकाश'' की रचना की। बाद में इन्हीं सुधारों के विषय में भी महात्मा गांधी ने पहल करके अपने जीवन में उतारा व लोगों को भी प्रेरणा दी। भारतीय संविधान जो 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ उसमें भी इन्हीं सुधारों को प्राथमिकता मिली जिन्हें गांधीजी ने अपनाया व सर्वप्रथम ऋषि दयानन्द ने उद्घोषित किया था। पराधीनता के इतिहास में सन् 1193 में पृथ्वी राज चौहान को हरा कर शाहबुद्दीन ने दिल्ली में मुसलमानों का राज्य स्थापित किया जो सन 1757 तक चला। जिसमें कई खुंखार व खूनी शासकों ने 564 वर्ष में भारत में खूब मारकाट मचाई। बाद में अंग्रेजों ने सन् 1947 तक 190 वर्ष के शासन में भारत से सोने की चिड़िया चुरा ली और भारत को कंगाल बना दिया। आज हम आजाद भारत में सांस ले रहे हैं। हमें राजनीति में भाग लेकर संसद द्वारा किये जा रहे सुधार और कार्यक्रमों में व कानून बनाने में हिस्सा लेना चाहिए। संसद में जब प्रकाशवीर शास्त्री (आर्य विचारक) का भाषण होता था तब संसद में पूर्ण रूप से शान्ति रहती थी व सांसद बड़े ध्यान पूर्वक भाषण सुनते थे। आज संसद में स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती पहुंचे हैं तो उनका लाभ भी पूरे भारत वर्ष को प्राप्त होगा। मंत्र– **सो कर्दि रिक्त पिन्द्र यज्ज रित्रे विश्वास ब्रहा कणवः शनिष्ठ। कदा धियोन नियुतों युवासे कदा गोमधा हवनानि गच्छा।। ऋग्वेद 41713**

अर्थ–हे इन्द्र (राष्टाध्यक्ष) आपके सुशासन में धन वृद्धि, पूर्ण बुद्धिमता एवं उत्तम क्रिया कलापों को लागू कीजिये, जिससे प्रजा का भला हो। अब हम 15 अगस्त सन् 1947 से हर साल स्वतंत्रता दिवस एवं 26 जनवरी 1950 से भारतीय संविधान होने का गणतंत्र दिवस मानते आ रहे हैं। 15 अगस्त को लाल किले पर प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया जाता है और राष्ट्र को संबोधन देते हैं, जिसमें भावी नीतियों की झलक दिखलाई पड़ती है। 26 जनवरी को दिल्ली के पथ पर राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। जिसमें देश–विदेश के महान, पदाधिकारी, नेता, गणमान्य लोग व आम जनता भी शरीक होती है। कार्यक्रम में मिलिट्री परेड, घातक हथियार प्रदर्शन, प्रदेशों की सांस्कृति झांकियों, वीर बालकों की सवारी, लडाकू विमानों आदि का उत्कृष्ट प्रदर्शन एवं मेडल वितरण किये जाते हैं। स्थानीय स्तर पर भी ये दोनों कार्यक्रम प्रदेश व जिला स्तर पर सरकारी कार्यालयों व सरकारी एवं निजी विद्यालयों में बड़े उत्साह के साथ सरकारी आदेशानुसार मनाये जाते हैं, इनाम, प्रशंसा पत्र व मिठाईयां भी खूब बांटी जाती हैं। लेकिन अफसोस की बात यह है कि जनता जनार्दन ने ये पर्व अपने स्तर पर स्वीकार नहीं किये हैं। कितना अच्छा होता यदि भारत का हर नागरिक अपने घर, संस्थान में तिरंगा झंडा फहराता, राष्ट्रीय गान गाता व मिठाई बांटता। कुछ लोग तो यह भी मानते हैं कि तिरंगा झंडा तो कांग्रेस का है, इससे हमारा क्या लेना–देना। लेकिन यह तो स्पष्ट है कि तिरंगा झंडा ऊपर से केशरिया बहादुरी का, नीचे हरा हरियाली खेती का एवं बीच में सफेद शान्ति का प्रतीक है, जिसके बीच में अशोक चक्र की 24 पंखुड़ियां होती हैं व कुल साईज 1 X 1.5 का अनुपात रहता है। कांग्रेस के झंडे तिरंगे के बीच में हाथ के पंजे का निशान है। अलग–अलग राजनैतिक दलों के अलग–अलग प्रकार के झंड हैं, वैसे ही धार्मिक पंथों के भी तरह–तरह के झंडे हैं। राष्ट्रीय ध्वज के अलावा सभी प्रकार के झंडे चौबीसों घंटे लहराते रहते हैं। जहां तक राष्ट्रीय ध्वज का प्रश्न है वहां पार्टी अपना झंडा नहीं लगाकर केवल राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा ही फहरायेगी वह भी सुबह से शाम सूर्यास्त तक ही, चाहे न्यायालय हो अथवा प्रशासनिक भवन। हमारे आर्य समाज एवं उच्च संस्थाओं में राष्ट्रीय पर्व पर तिरंगा ध्वज फहराने का रिवाज नहीं है हाँ अगर कहीं किसे ने पर्व मना भी लिया तो उसका उल्लेख सामने नहीं आता। हमने केवल

ओ3म् का भगवा झंडा ही मान रखा है। कहने को तो हम बड़े गर्व से कहते हैं कि भारत के स्वतंत्र में 90 प्रतिशत जो शहीद हुए, यातनांए सहीं वो आर्य समाजी विचारधारा से प्रभावित थे। हमारे पूर्वजों ने स्वतंत्रता संग्राम में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया था तो उसका प्रतिफल राष्ट्रीय पर्व मनाने में पीछे क्यों रहें। हम भारत वासी जैसे होली, दिवाली, ईद–उल–फितर, गणेश चतुर्थी, जन्माष्टमी, क्रिसमसडे, लोहड़ी, दुर्गाष्टमी आदि पर्व बड़े उत्साह से मानते हैं, वैसे ही राष्ट्रीय पर्व क्यों नहीं मानतें! क्या हम में किसी प्रकार की कोई राष्ट्रीयता की कमी तो नहीं है। हमें इस विषय में गंभीरता से सोच–विचार की आवश्यकता है।

मैं (लेखक) नौकरी में अथवा सेवा निवृत्ति के बाद में भी जहां कहीं भी रहा उपरोक्त दोनों राष्ट्रीय पर्व मनाता आ रहा हूँ। मैंने प्रयत्न करके पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री का प्रवचन कार्यक्रम 15 अगस्त 2009 को सरस्ती बाल वीणा भारती सी.सै. स्कूल, सिरोला बेरा, सूरसागर, जोधपुर में रखा था, जो अत्यंत ही प्रभावशाली रहा है। लोगों ने खूब सराहा, जिसकी कैसेट भी मेरे पास उपलब्ध हैं इसी प्रकार 15 अगस्त 2013 को भी पं. रामनिवास गुणग्राहक का प्रवचन कार्यक्रम उसी स्कूल में रखा, जो बड़ा प्रशंसनीय रहा। (यह कैसेट भी मेरे पास उपलब्ध है।) इससे पहिले आर्य समाज सूरसागर एवं राजकीय बालिका सी. मै. स्कूल सूरसागर के प्रांगण में झंडा रोहण कर प्रवचन किया गया। अब इसी माह में यह पर्व 26 जनवरी का सामने हैं हमें प्रयत्न करके हर आर्य समाज, आर्यवीर दल शाखा एवं उच्च स्तरीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं में राष्ट्रीय पर्व मनाने की शुरूआत करनी चाहिए। देर आयद दुरूस्त आयद।

हमने सारे संसार को आर्य बनाने का बीड़ा उठा रखा है, तो हमें सबसे पहले हमारी उच्च कोटि की राष्ट्रीयता प्रस्तुत करनी चाहिए। अतः सभी आर्य जनों से नम्र निवेदन है कि उक्त पर्व को पूर्ण श्रद्धा के साथ मनावें और इसका अच्छी तरह प्रसार प्रचार भी उपलब्ध साधनों मीडिया, पत्र–पत्रिकाएं आदि के द्वारा करावे एवं अपने विचार प्रस्तुत करावें।

मंत्री, आर्य समाज,
सूरसागर,जोधपुर
मो0नं0–9413288979
(से.नि.) शाखा प्रबन्धक
भारतीय जीवन बीमा निगम

विश्व में सर्वोपरि भारतीय संस्कृति

डॉ.बृजेश कुमार

संस्कृति शब्द का संबन्ध संस्कार से है, जिसका अर्थ है, संशोधन करना, उत्तम बनाना। संस्कार व्यक्ति के भी होते हैं और जाति के भी। जातीय संस्कारों को ही संस्कृति कहते हैं। जलवायु के अनुकूल रहन–सहन की विधियां और विचार तथा परम्पराएं जाति के लोगों में रचनात्मक तरीके से ढल जाती हैं। जो बाद में जाति के संस्कार बन जाते हैं। ये संस्कार व्यक्ति के जीवन को अच्छी दिशा में ले जाते हैं। संस्कृति का बाह्य पक्ष भी होता है और आन्तरिक भी। हमारे वाह्य आचार हमारे विचारों और मनोवृत्तियों के परिचायक होते हैं। संस्कृति एक देश–विदेश की उपज होती है। हमारा रहन–सहन, पोशाक आदि सभी बातें जातीय परिस्थिति, देश के वातावरण और रुचि के अनुकूल ही निश्चित हो जाती हैं। जमीन पर बैठना, हाथ से खाना, नहाकर खाना, लम्बे ढीले कपड़े पहनना, ये सब चीजें देश की जनता की भावनाओं से संबन्धित हैं। इसी प्रकार देश के वातावरण और रुचि के अनुकूल ही उचित वस्तुओं का विधान किया जाता है। फूलों में हमारे यहां कमल को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। नदियों में गंगा को, पक्षियों में गरुड़ को, तथा ऋतुओं में बसंत को महत्व दिया जाता है। भारतीय संस्कृति के मुख्य अंग आध्यात्मिकता, समन्वय बुद्धि, अहिंसा, करुणा, मैत्री, विनय एवं प्रकृति प्रेम है। हमारी संस्कृति इतने में ही संकुचित नहीं है। पारिवारिकता पर हमारी संस्कृति में विशेष बल दिया गया है। भारत में सच्चाई को विशेष महत्व प्रदान किया गया है। अतिथि को देवता समान माना गया है।

भारत में विभिन्न जातियों के पारस्परिक संपर्क में आने से संस्कृति का महत्व पूरे विश्व में फैला हुआ है। इन विभिन्न जातियों की संस्कृति रचनात्मक दिशा में बढ़नी चाहिए, तभी भारत का विकास संभव है। हमें अपनी संस्कृति के मूल अंगों पर ध्यान रखते हुए समन्वय बुद्धि से काम लेना चाहिए। समन्वय द्वारा ही संस्कृति क्रमशः उन्नति करती रही है और हमें उसे और समन्वयशील बनाना चाहिए।

आर्य समाज के बुक स्टॉल पर उपस्थित पाठक वृन्द- केसरी

नेशनल बुक ट्रस्ट के तत्वावधान में हुआ भव्य पुस्तक मेले का आयोजन

विनय आर्य
कटक (ओड़िशा)।

ओड़िशा राज्य पुराना राजधानी तथा ऐतिहासिक शहर कटक वरवाटी मैदान में 'नेशनल बुक ट्रस्ट' के तत्वावधान में भव्य पुस्तक मेले का आयोजन किया गया, जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं श्रुतिन्यास, ओड़िशा के संयुक्त सहयोग से 'आर्ष-साहित्य' की बुक स्टॉल का **उद्घाटन** श्रुतिन्यास के अध्यक्ष स्वामी सुधानन्द सरस्वती के कर कमलों से हुआ बुक स्टॉल की विषमता यह थी यहाँ हिंदी, संस्कृत एवं ओड़िशा भाषा में उपलब्ध था, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' वेद भाष्यों एवं वेद भाष्यों की वी.सी.डी. का प्रमुख रूप विक्रय हुआ। पुस्तक स्टॉल के प्रभारी रवि प्रकाश ने यह जानकारी दी कि **प्रद्युमन**, सन्तोष, पदमनाभ, सोमेश सौम्याजी और स्वामी सुधानन्द सरस्वती स्वयं उपस्थित रहकर साहित्य प्रचार हेतु भरपुर उत्साह और सहयोग प्रदान किया।

ओड़िशा प्रान्त में वैदिक साहित्य प्रचार के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की सार्वजानिक स्थानों पर पुस्तक मेले लगाने का सहरानीय कार्य है।

कोटा क्षेत्र में सघन वेद प्रचार

अरविन्द पाण्डेय
कोटा (राजस्थान)।

महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति आर्य समाज कोटा द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में वेद प्रचार कार्यक्रम के तहत कोटा जिले के इटावा कस्बे में दो दिवसीय संगीतमय वेदकथा तथा ग्यारह कुण्डीय राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ का आयोजन किया गया। वेदप्रचार समिति के अध्यक्ष अरविन्द पाण्डेय ने बताया कि 27 एवं 28 दिसम्बर 2014 को इटावा में कोटा शहर से 80 किलोमीटर दूर आयोजित इस दो दिवसीय संगीतमय वेदकथा में वैदिक प्रवाचक आचार्य अग्निमित्र शास्त्री द्वारा अपने प्रवचन में वेद, ईश्वर, जीत, प्रकृति, यज्ञ, धर्म तथा आध्यात्म संबंधी वैदिक सिद्धान्तों की सरलतम रीति से जानकारी दी तथा वेदानुकूल धर्ममार्ग पर चलने का आह्वान किया।

अलीगढ़ (उ.प्र.) से पधारे आर्य समाज के ख्याति प्राप्त भजनोपदेश पं. भूपेन्द्र सिंह आर्य एवं लेखराज शर्मा ने अपने सुमधुर भजनों एवं गीत के माध्यम से आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों तथा कार्यों से अवगत कराया।

राष्ट्र कल्याण यज्ञ में आहूति प्रदान करते यजमान- केसरी

जिला आर्य सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि गांवों में वेद का प्रचार अत्यन्त जरूरी है। समाज में व्याप्त अंधकार वैदिक सिद्धान्तों के ज्ञान से ही दूर होगा। जिलासभा मंत्री कैलाश बाहेती ने कहा कि आर्य समाज वेदों की बात करता है यह एक क्रांतिकारी सुधारवादी संगठन है हमें इससे जुड़ना चाहिए। वेद प्रचार समिति के मन्त्री प्रभुसिंह ने बताया कि वेदकथा के इस अवसर पर आचार्य अग्निमित्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में 11 कुण्डीय राष्ट्रसमृद्धि महायज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ में उपस्थित यज्ञमानों ने विश्व शांति के निमित्त अथर्ववेद के पृथिती सूक्त की विशेष आहूतियां दी। पं. क्षेत्रपाल आर्य तथा पं. श्योराज वशिष्ट ने यज्ञ में ऋत्विक कार्यों का निर्वहन किया।

इस अवसर पर आर्य समाज द्वारा वैदिक साहित्य की स्टाल लगाई गई। जिसमें लोगों ने बड़ी संख्या में सत्यार्थ प्रकाश एवं वैदिक साहित्य खरीदा। कथा पाण्डाल में पर्यावरण संरक्षण, जल बचाओ, भूमि बचाओ, यज्ञ, खानपान तथा ऋषि के जीवन की जानकारी देने वाले चित्र, बैनर तथा पोस्टर लगाये गये थे। ओ३म् के ध्वज आकर्षण का केन्द्र थे।

वेदकथा के इस आयोजन में उल्लेखनीय सहयोग करने के लिए इटावा के नरेन्द्र नागर, राजेन्द्र गौड़ एवं सुनील सोनी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट देकर तथा दुपट्टा ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर **बड़ी संख्या में विद्वान, पदाधिकारी व आर्यजन उपस्थित रहे।**

आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 88222200014649 में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अपने पासपोर्ट साइज़ फोटो, नाम, पते व चलभाष सहित अविलम्ब हमें भेज दें। सहयोग राशि एकाउन्टपेयी चैक या धनादेश द्वारा भी भेजी जा सकती है। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)
दूर.-05922-262033, चल.- 09758833783, 08273236003

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक',
विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र,
यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई,
डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी,
इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जेपी नगर
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
:05922-262033,
9412139333 फैक्स: 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
e-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com